وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٢٤

आयत न० 24

**और वो औरतें** (भी हराम हैं यानी उन से भी निकाह जाइज़ नहीं) **जो कि शादी शुदा** (हैं यानी किसी दूसरे के निकाह में) **हैं** (इससे मालूम हुआ कि एक औरत के एक से ज़्यादा शौहर नहीं हो सकते) **लेकिन जिन** (बान्दियों) **के तुम** (शरीअ़त की रू से) **मालिक हो जाओ** (वो इस हुक्म से अलग हैं इस मसअले को अगर जानना चाहें तो आ़लिमों से समझ लें), **अल्लाह तआ़ला ने इन हुक्मों को तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है, और इन** (ऊपर बताई) **औरतों के सिवा और** (बाक़ी) **औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं यानी यह कि तुम उन को अपने मालों के वास्ते से** (निकाह में लाना) **चाहो** (यानी महर होना निकाह में ज़रूरी है, और) **इस तरह कि तुम** (उन को) **बीवी बनाओ** (जिसकी शर्तें शरीअ़त में मशहूर हैं और) **सिर्फ़ मस्ती ही निकालना न हो** (इस में बदकारी व मुतआ़ सब आगये भले ही इस में भी माल ख़र्च किया जाता है), **फिर** (निकाह हो जाने के बाद) **जिस तरह से तुमने उन औरतों से नफ़ा उठाया है सो उन को उन का महर अदा कर दो जो कुछ तय किया गया है, और** (यह न समझो कि इस तरह तय किये हुए में नमाज़ रोज़े की तरह कम ज़्यादा नहीं हो सकता बल्कि) **तय हो जाने के बाद भी जितने** (महर) **पर तुम** (मियां बीवी) **आपस में राज़ी हो जाओ उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं** (जैसे शौहर ने और महर बढ़ा दिया या औ़रत ने ख़ुशी से कम कर दिया या मुआ़फ़ ही कर दिया हर तरह ठीक है), **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े जानने वाले हैं** (तुम्हारी भलाइयों को अच्छी तरह जानते हैं) **बड़ी हिकमत वाले हैं** (उन भलाइयों के हिसाब से हुक्म दिये हैं चाहे तुम्हारी समझ में न आएं)**(24)।**

**नोटः-** मुतआ़ यानी मीआ़दी निकाह यह है कि कोई मर्द किसी औरत से यह कहे कि इतनी रक़म के बदले में मैं तुम से इतने दिनों के लिए मुतआ़ करता हूं और वो राज़ी हो जाए तो यह काम शरीअ़त से हराम और नाजाइज़ है यह भी बदकारी की एक क़िस्म है। हज़रत अली से बयान की हुई एक हदीस में मुतआ़ को नाजाइज़ बताया गया है।

وَ مَنۡ لَّمۡ يَسۡتَطِعۡ مِنۡكُمۡ طَوۡلًا اَنۡ يَّنۡكِحَ الۡمُحۡصَنٰتِ الۡمُؤۡمِنٰتِ فَمِنۡ مَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ مِّنۡ فَتَيٰتِكُمُ
الۡمُؤۡمِنٰتِ‌ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِاِيۡمَانِكُمۡ‌ؕ بَعۡضُكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡضٍ‌ۚ فَانْكِحُوۡهُنَّ بِاِذۡنِ اَهۡلِهِنَّ وَاٰتُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ
بِالۡمَعۡرُوۡفِ مُحۡصَنٰتٍ غَيۡرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخۡدَانٍ‌ۚ فَاِذَاۤ اُحۡصِنَّ فَاِنۡ اَتَيۡنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيۡهِنَّ
نِصۡفُ مَا عَلَى الۡمُحۡصَنٰتِ مِنَ الۡعَذَابِ‌ؕ ذٰلِكَ لِمَنۡ خَشِىَ الۡعَنَتَ مِنۡكُمۡ‌ؕ وَاَنۡ تَصۡبِرُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ‌ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ
رَّحِيۡمٌ ﴿۲۵﴾

आयत न० 25

**और जो आदमी तुम में पूरी गुन्जाइश न रखता हो आज़ाद मुसलमान औरतों से निकाह करने की तो वो अपने आपस** (वालों) **की मुसलमान बान्दियों से जिन के तुम लोग** (शरीअ़त से) **मालिक हो निकाह करले, और** (बान्दी से निकाह करने में न शर्माए क्योंकि हो सकता है दीन की रू से वो तुम से अच्छी हो और तुम्हारे दीन और) **तुम्हारे ईमान की पूरी हालत अल्लाह ही को पता है,** (फिर असल में बाप तो सबके आदम अलैहिस्सलाम हैं इस तरह) **तुम सब आपस में एक दूसरे के बराबर हो** (फिर क्या शर्माना), **सो** (ज़रूरत के वक़्त) **उन से निकाह कर लिया करो** (मगर यह निकाह) **उन के मालिकों की इजाज़त से** (हो) **और उन** (के मालिकों) **को उन के महर दस्तूर के हिसाब से दे दिया करो** (और यह महर देना) **इस तरह पर** (हो) **कि उन से निकाह किया जाए न तो खुली बदकारी करने वाली हों और न छुप-छुप कर यारी करने वाली हों** (यानी वो महर निकाह के लिए हो बदकारी के लिए वो माल देने से हलाल न होंगी)**, बस जब वो बान्दियां बीवी बना ली जाएं फिर अगर वो बड़ी बेशर्मी का काम** (यानी बदकारी) **करें तो** (साबित हो जाने के बाद शर्त यह है कि मुसलमान हों) **उन पर उस सज़ा से आधी सज़ा** (जारी) **होगी जो कि** (बे बियाही) **आज़ाद औरतों पर होती है, यह** (बान्दियों से निकाह करना) **उस आदमी के लिए** (ठीक) **है जो तुम में** (जी पर क़ाबू न होने और आज़ाद बीवी न मिलने की वजह से) **गुनाह** (में पड़ जाने) **का ख़तरा रखता हो** (और जिस को यह ख़तरा न हो उस के लिए ठीक नहीं)**, और** (अगर इस ख़तरे की हालत में भी अपने जी पर क़ाबू हो तो) **तुम्हारा सब्र करना ज़्यादा अच्छा है** (बान्दी से निकाह करने से) **और** (यूं) **अल्लाह तआला बड़े बख़्शने वाले हैं** (कि बेज़रूरत भी निकाह कर लिया तो पकड़ नहीं) **बड़ी रहमत वाले हैं** (कि हराम होने का हुक्म नहीं दिया)**(25)**

नोटः- घर के नौकर चाकर और घरों में काम करने वाली नौकरानियां गुलाम बान्दी नहीं हैं इसलिए कि ये आज़ाद हैं। कुछ इलाक़ों में बच्चों को बेंच देते हैं और गुलाम बना लेते हैं यह सरासर हराम है और ऐसा करेन से ये गुलाम बान्दी नहीं बन जाते। आज बान्दियों का कहीं वजूद नहीं है।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ يَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾ وَاللّٰهُ
يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۟ وَ يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ
عَنْكُمْ ۚ وَ خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ
ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

आयत न० 26 से 30

**अल्लाह तआला** (का इन बातों को बयान करने से कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि तुम को नफ़ा पहुंचाने के लिए) **यह चाहते हैं कि** (हुक्मों की आयतों में तो) **तुम से** (तुम्हारी भलाई के हुक्म) **बयान कर दें और** (क़िस्सों की आयतों में) **तुम से पहले लोगों की बातें तुम को बता दें** (ताकि तुम को उन के तरीक़े पर चलने का शौक़ हो और ख़िलाफ़ चलने से डर हो) **और तुम पर** (रहमत के साथ) **तवज्जो करें, और अल्लाह तआला बड़े जानने वाले हैं** (कि बन्दों की भलाई जानते हैं) **बड़े हिकमत वाले** (हैं कि बन्दों की भलाई का ध्यान रखते) **हैं(26) और अल्लाह तआला तो तुम्हारे हाल पर** (रहमत से) **तवज्जो करना चाहते हैं, और जो लोग** (काफ़िरों में से) **मज़ों के पीछे हैं वो यह चाहते हैं कि तुम** (सीधे) **रास्ते से बहुत दूर** (हो जाओ और उन्हीं जैसे) **हो जाओ(27)** (और) **अल्लाह तआला** (हुक्मों में) **तुम्हारे साथ आसानी** (भी) **चाहते हैं और** (वजह इसकी यह है कि) **इन्सान** (दूसरे हुक्म बरदारों के मुक़ाबिले बदन और हिम्मत दोनों में) **कमज़ोर पैदा किया गया है** (इसलिए उस की कमज़ोरी के हिसाब से हुक्म रक्खे हैं)(28) **ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के माल नाहक़** (यानी नाजाइज़) **तरीक़े पर मत खाओ** (बरतो) **लेकिन** (जाइज़ तरीक़े पर हो जैसे) **कोई कारोबार हो जो आपस की मर्ज़ी से हो** (शर्त यह है कि शरीअ़त के हिसाब से हो) **तो हरज नहीं** (वो जाइज़ है), **और तुम एक दूसरे को क़त्ल भी मत करो, बेशक अल्लाह तआला तुम पर बड़े महरबान हैं** (इसलिए नुक़सान की सूरतों को मना किया ख़ास कर जब कि उसमें यह असर हो कि दूसरा आदमी फिर तुम को नुक़सान पहुंचाएगा तो यह अल्लाह तआला की

मेहरबानी है कि तुम को नुक़सान से बचा लिया)(29) **और जो आदमी ऐसा काम** (यानी क़त्ल) **करेगा इस तरह से कि** (शरीअ़त की) **हद से निकल जाए और** (हद से निकलना भी ग़लती से नहीं बल्कि) **इस तरह कि** (जान बूझकर) **ज़ुल्म करे तो हम जल्दी ही** (यानी मरने के बाद) **उस को** (दोज़ख़ की) **आग में दाख़िल करेंगे और यह बात** (यानी ऐसी सज़ा देना) **अल्लाह तआ़ला को** (बिल्कुल) **आसान है** (यानी इस के लिए सामान जमा करने की ज़रूरत नहीं और ऐसा नहीं कि कभी सामान जमा न हो तो सज़ा टल जाए)(30)।

**नोटः**- अपना माल भी नाजाइज़ कामों में ख़र्च करना गुनाह है।

إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ
اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ
فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ
عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾

आयत न० 31 से 33

**अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहों से बचो जिन से** (शरीअ़त में) **मना किया गया है तो** (इस बचने पर हम वादा करते हैं कि तुम्हारे नेक काम करने से जब कि वो क़ुबूल हो जाएं) **हम तुम्हारी छोटी- छोटी बुराइयां** (यानी छोटे-छोटे गुनाह जो कि दोज़ख़ में ले जा सकते हैं) **तुम से दूर** (यानी मुआ़फ़) **कर देंगे** (बस दोज़ख़ से बच जाओगे) **और हम तुम को एक इ़ज़्ज़त की जगह** (यानी जन्नत) **में दाख़िल कर देंगे**(31) **और तुम** (सब मर्दों व औरतों को हुक्म होता है कि अल्लाह की दी हुई नेमतों में से) **ऐसी किसी चीज़ की तमन्ना मत किया करो जिसमें अल्लाह तआ़ला ने कुछ को** (जैसे मर्दों को) **कुछ पर** (जैसे औरतों पर उन की किसी कोशिश के बिना) **बड़ाई दी है** (जैसे मर्द होना, या मर्दो का हिस्सा दूना होना या उन की गवाही का पूरा होना), **मर्दों के लिए उन के नेक कामो** (के सवाब) **का हिस्सा** (आख़रत में) **साबित है, और औरतों के लिए उन के नेक कामों** (के सवाब) **का हिस्सा** (आख़रत में) **साबित** (है और बख़शिश का मदार ये नेक काम ही हैं इसलिए अगर दूसरों से बढ़ने का शौक़ है तो इन नेक कामों में बढ़ने की कोशिश करे और अपने बस से बाहर की चीज़ों की तमन्ना बेकार) **है, और अल्लाह तआ़ला से उस की** (ख़ास) **महरबानी की दुआ़ किया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं**(32) **और हर**

**ऐसे माल के लिए जिस को मां बाप और** (दूसरे) **रिशतेदार लोग** (अपने मरने के बाद) **छोड़ जाएं हम ने वारिस तय कर दिये हैं, और जिन लोगों से तुम्हारे वादे** (पहले से) **बन्धे हुए हैं उन को** (अब सिर्फ़) **उन का हिस्सा** (यानी छटा हिस्सा) **देदो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को जानते हैं** (कि कौन उन के हुक्म को मानता है कौन नहीं मानता)(33)।

**नोटः**- यह छटा हिस्सा देने वाला हुक्म बाद की आयत में बदल दिया गया और मीरास के कुल वारिस तय कर दिये गये।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَ الّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَ اهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَ
اضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿۳۴﴾ وَ اِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا
فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا
خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

आयत न० 34 से 35

**मर्द ज़िम्मेदार हैं औरतों पर** (दो वजह से, एक तो) **इस लिए कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ को** (यानी मर्दों को) **कुछ पर** (यानी औरतों पर कुदरती) **बड़ाई दी है** (यह तो अल्लाह तआ़ला की दी हुई है) **और** (दूसरे) **इसलिए कि मर्दों ने** (औ़रतों पर) **अपने माल** (महर और खान पान में) **ख़र्च किये हैं** (और ख़र्च करने वालों का हाथ ऊंचा होता है उन से जिन पर ख़र्च किया जाए), **सो जो औरतें नेक हैं** (मर्द का) **कहना मानती हैं** (और) **मर्द के पीछे भी अल्लाह की** (तौफ़ीक़ व) **हिफ़ाज़त से** (उस की इज़्ज़त व माल की) **देख भाल करती हैं, और जिन औरतों से तुम्हें बद मिज़ाजी का डर हो तो उन को तुम** (पहले नर्मी से) **समझाओ और** (न मानें तो अपनी नाराज़ी दिखाने के लिए) **उन को उन के लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो** (यानी उन के पास मत लेटो) **और** (इस से भी न मानें तो) **उन को** (हल्की मार) **मार सकते हो** (मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने को पसन्द नहीं किया बल्कि कहा कि शरीफ़ और भले लोग ऐसा नहीं करेंगे), **फिर अगर वो तुम्हारा कहना मानना शुरू कर दें तो उन पर** (सख़्ती करने को) **बहाना** (और मौक़ा) **न तलाश करो,** (क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला सबके ऊपर सबसे बड़े हैं** (अगर वो तुम्हारी ग़लतियों पर पकड़ने लगें तो सोचो फिर क्या हो)(34) **और अगर** (अन्दाज़े से) **तुम ऊपर**

**वालों को उन दोनों मियां बीवी के बीच** (ऐसी) **फूट पड़ने का डर हो** (कि उस को वो आपस में न सुलझा सकेंगे) **तो तुम लोग एक आदमी जो समझौता** (और फ़ैसला) **कराने के क़ाबिल हो मर्द के ख़ानदान से और एक आदमी जो** (ऐसा ही) **समझौता कराने के क़ाबिल हो औरत के ख़ानदान से** (चुन कर इस झगड़े को दूर करने के लि उन के पास) **भेजो** (कि जाकर सही बात का पता करें और जो ग़लती पर हो उस को या दोनो की कुछ कुछ ग़लती हो तो दोनों को समझाएं) **और वो दोनो आदमी अगर** (सच्चे दिल से) **सुधार कराना चाहेंगे तो अल्लाह तआ़ला उन मियां बीवी में** (शर्त यह है कि वो दोनो उन दोनो आदमियों की बात भी मानें) **मेल जोल पैदा करा देंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े जानने वाले और** (हर बात की) **ख़बर रखने वाले हैं** (जिस तरह से उन में मेल हो सकता है जानते हैं अगर समझौता कराने वालों की नीयत ठीक देखेंगे मेल कराने का तरीक़ा उन के दिल में डाल देंगे)(35)।

**नोटः-** घरेलू झगड़ों को ख़त्म करने के लिए शरीअ़त ने कैसा इन्तिज़ाम बताया है कि पहले तो कोशिश यह हो कि घर के झगड़े घर में ही निपट जाएं अगर ऐसा न हो सके तो बिरादरी के लोग दोनों ख़ानदानों से दो ज़िम्मेदार बना दें जो उन में समझौता करा दें जब यह भी न हो सके तो आख़ीर में बात अदालत तक पहुंचे और हाकिम को चाहिए कि दोनों के हालात की खोजबीन करके इन्साफ़ का फ़ैसला कर दे।

وَ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ لَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ الْجَارِ ذِی
الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ
كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ﴿۳۶﴾ اۨلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ
اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿۳۷﴾ وَ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ وَ مَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾

आयत न० 36 से 38

**और तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह की इबादत करो और उस के सथ किसी चीज़ को** (चाहे वो इन्सान हो या कोई और हो इबादत में या ऐतक़ाद में) **साझी मत करो और** (अपने) **मां बाप के साथ अच्छा सलूक करो और रिशतेदारों के साथ** (भी) **और यतीमों के साथ** (भी) **और ग़रीबों**

**के साथ** (भी) **और पास वाले पड़ौसी के साथ** (भी) **और दूर वाले पड़ौसी के साथ** (भी) **और पास बैठने वाले के साथ** (भी) **और मुसाफ़िर के साथ** (भी चाहे तुम्हारा ख़ास महमान हो या न हो) **और अपने गुलाम बान्दियों के साथ** (भी, और नौकरों के साथ भी यानी इन सब से अच्छा बरताव करो), **बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों से मुहब्बत नहीं रखते जो** (दिल में) **अपने को बड़ा समझते हैं** (और ज़बान से) **शेख़ी की बातें करते** (हैं यानी डींग मारते) **हैं(36)** (और) **जो लोग कंजूसी करते हैं और दूसरे लोगों को भी कंजूसी सिखाते हों** (चाहे ज़बान से या इस तरह से कि उन को देख कर दूसरे भी सीखते हों) **और वो उस चीज़ को छुपाते हों जो अल्लाह तआ़ला ने उन को अपनी महरबानी से दी है** (चाहे वो माल दौलत हो या इल्म), **और हमने ऐसे नाशुक्रों के लिए रूसवाई भरी सज़ा तैयार कर रक्खी है(37) और जो लोग अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह तआ़ला पर और आख़री दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **पर यक़ीन नहीं रखते** (उन से भी अल्लाह तआ़ला को मुहब्बत नहीं), **और** (बात यह है कि) **शैतान जिस का साथी हो** (जैसा इन लोगों का हुआ है) **तो वो उस का बुरा साथी** (है कि ऐसी राय देता है जिस का अन्जाम बहुत बुरा) **है(38)।**

**नोटः-** हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत के दिन जब नेक कामों का सवाब बांटा जाएगा तो अल्लाह तआ़ला इन दिखावा करने वालों से कहेंगे उन के पास चले जाओ जिन को दिखाने के लिए तुम दुनिया में नेक काम करते थे और देख लो कि क्या उनके पास तुम्हारे कामों का सवाब और उस का बदला है। (बैहक़ी)

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ
اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى
بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾

आयत न० 39 से 42

**और उन पर क्या मुसीबत आजाएगी अगर वो लोग अल्लाह तआ़ला पर और आख़री दिन** (यानी क़ियामत) **पर ईमान ले आएं और अल्लाह ने जो उन को दिया है उसमें से कुछ** (सच्चे मन से नेक कामों में) **ख़र्च करते रहा करें** (यानी कुछ भी नुक़सान नहीं हर तरह नफ़ा ही

नफ़ा है), **और अल्लाह तआला उन** (की नेकी व बुराई) **को अच्छी तरह जानते हैं** (बस नेकियों पर सवाब और गुनाहों पर अज़ाब देंगे)(39) **बेशक अल्लाह तआला ज़रा भी ज़ुल्म न करेंगे** (कि किसी का सवाब मार लें या बेबात सज़ा देने लगें), **और** (बल्कि वो तो ऐसे महरबान हैं कि) **अगर एक नेकी होगी तो उस को कई गुना कर** (के सवाब) **देंगे** (जैसा कि दूसरी आयतों में आया है) **और** (इस सवाब के सिवा) **अपने पास से बड़ा सवाब** (अलग से इनाम में) **देंगे(40) सो** (ये लोग सोचें कि) **उस वक़्त भी** (उन का) **क्या हाल होगा जब कि हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे और** (ऐ पैग़म्बर) **आप को इन लोगों पर** (जिन से आप का वास्ता हुआ है) **गवाही देने के लिए हाज़िर करेंगे(41) उस दिन** (यह हाल होगा कि) **जिन लोगों ने** (दुनिया में) **कुफ़्र किया होगा और पैग़म्बर का कहना न माना होगा वो इस बात की तमन्ना करेंगे कि काश** (इस वक़्त) **हम ज़मीन के बराबर हो जाएं** (यानी ज़मीन में समा जाएं, ताकि इस रूसवाई और मुसीबत से बचे रहें), **और** (वो अपने जुर्म का इक़रार भी करेंगे क्योंकि) **अल्लाह से किसी बात को** (जो उन से दुनिया में हुई) **छुपा न सकेंगे(42)।**

**नोटः-** सभी पैग़म्बर क़ियामत के दिन अपनी-अपनी उम्मतों के अच्छे-बुरे कामों पर गवाही देंगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत के लोगों पर गवाह बनाकर पेश किया जाएगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَ لَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى
تَغْتَسِلُوْا ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً
فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾

आयत न० 43

**ऐ ईमान वालो तुम नमाज़ के पास भी ऐसी हालत में मत जाओ** (यानी ऐसी हालत में नमाज़ मत पढ़ो) **कि तुम नशे में हो यहां तक कि तुम समझने लगो कि मुंह से क्या कहते हो** (यानी नमाज़ के वक़्त नशा मत करो कभी तुम्हारे मुंह से ग़लत बोल निकल जाएं) **और नापाकी की हालत में भी** (नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं यानी जब कि नहाना फ़र्ज़ हो) **सिवाए तुम्हारे मुसाफ़िर होने की सूरत के** (कि इस का हुक्म आगे आता है, नमाज़ के पास मत जाओ) **यहां तक कि ग़ुस्ल कर लो** (यानी नहा कर पाक हो जाओ), **और अगर तुम** (को कुछ मजबूरी हो जैसे) **बीमार हो** (कि पानी नुक़सान देता हो) **या सफ़र की हालत में हो** (यानी पानी नहीं मिलता या) **तुम में से कोई**

**आदमी** (पेशाब या पाख़ाने के) **इस्तन्जे से** (होकर) **आया हो** (जिससे वुज़ू टूट जाता है) **या तुम ने बीवियों से मिलाप किया हो** (जिससे गुस्ल टूट गया हो और) **फिर** (किसी वजह से) **तुम को पानी** (बरतने का मौक़ा) **न मिले** (चाहे बीमारी में नुक़सान की वजह से या पानी न मिलने की वजह से) **तो** (इन सब हालतों में) **तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो** (यानी उस मिट्टी पर दो बार हाथ मार कर) **अपने चेहरों और हाथों पर हाथ फेर लिया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़े बख़्शने वाले हैं** (इस लिए ऐसे-ऐसे आसान हुक्म दे दिये कि तुम को तकलीफ़ व तंगी न हो)(43)।

**नोटः**- बाद में शराब के हराम होने का हुक्म आ गया तो किसी भी सूरत में शराब का पीना जाइज़ नहीं रहा।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ
بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۫ وَّ كَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ
يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا وَ اسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَ طَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَ لَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا
سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا وَ اسْمَعْ وَ انْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَ اَقْوَمَ ۙ وَ لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا
عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾

आयत न० 44 से 47

(ऐ पैग़म्बर) **क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा** (यानी उन को देख कर अचम्भा हो) **जिन को** (अल्लाह की) **किताब** (यानी तौरेत के इल्म) **का एक बड़ा हिस्सा मिला है** (इसके बावजूद) **वो लोग गुमराही** (यानी कुफ़्र) **अपना रहे हैं और** (ख़ुद तो गुमराह हुए ही थे मगर वो) **यह चाहते हैं कि तुम** (भी सीधे) **रास्ते से भटक जाओ** (यानी तरह-तरह की कोशिशें इस की करते हैं)(44) **और** (तुम को इन लोगों की अब तक ख़बर न हो तो क्या हुआ) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **तुम्हारे** (उन) **दुशमनों को अच्छी तरह जानते हैं** (इसलिए तुम को बता दिया तो तुम उन से बचते रहो)**, और** (उन की दुशमनी की बात सुन कर घबराने की ज़रूरत नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला का साथ** (तुम्हारे लिए) **काफ़ी है** (कि तुम्हारी भलाई का ध्यान रक्खेगा) **और अल्लाह तआ़ला की मदद**

(तुम्हारे लिए) **काफ़ी है** (कि उनके नुक़सान से बचाएगा)(45) **ये लोग** (जिन का ज़िक्र हुआ) **यहूदियों में से हैं** (और उन की गुमराही यह कि अल्लाह के) **कलाम** (यानी तौरेत) **को उस की जगह से** (बोल या मतलब से) **दूसरी तरफ़ फेर देते हैं और** (एक गुमराही उन की जिसमें धोके से दूसरा सीधा आदमी फंस सकता है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात चीत करते वक़्त) **ये बोल कहते हैं** (जिनके दो मतलब हो सकते हैं एक अच्छे और दूसरे बुरे और वो बुरा मतलब लेते थे, उनमें से से एक है) **समिअ़ना व अ़सैना** (इस का अच्छा मतलब तो यह है कि हम ने आप का हुक्म सुन लिया और बहकाने वाले को नहीं माना और दूसरा मतलब हम ने सुन लिया और माना नहीं, वो दूसरा मतलब लेते थे) **और** (दूसरा बोल यह है) **इस्मा ग़ैरा मुस्मइन** (इस का अच्छा मतलब तो यह है कि आप को दुख की बात न सुनने को मिले और बुरा मतलब यह है कि तुम को कोई ख़ुशी की बात न सुनाई दे) **और** (तीसरा बोल यह है) **राइना** (इसका अच्छा मतलब तो यह है कि हमारी तरफ़ ध्यान कीजिए और बुरा मतलब बद्दुआ़ है जैसा कि पहले सूरह बक़र में आ चुका है, यानी इन बोल को) **इस तरह** (कहते हैं) **कि अपनी ज़बानों को** (तौहीन के अन्दाज़ में) **फेर कर और** (दिल से) **दीन में ताना देने** (और तौहीन ही) **की नीयत से** (वजह यह कि नबी के साथ ताना या मज़ाक़ दीन के साथ ताना या मज़ाक़ है)**, और अगर ये लोग** (दो मतलब देने वाले बोल के बजाए) **ये बोल कहते** (बजाए समिअ़ना व असैना के) **समिअ़ना व अताना** (जिस का मतलब है हम ने सुन लिया और मान लिया) **और** (बजाए इस्मा ग़ैरा मुस्मइन के सिर्फ़) **इस्मा** (जिस का मतलब है कि आप सुन लीजिए) **और** (बजाए राइना के) **उन्ज़ुरना** (जिस का मतलब हमारी तरफ़ ध्यान कीजिए तो अगर ये बोल कहते) **तो यह बात उनके लिए अच्छी** (और नफ़े वाली) **होती और** (असलीयत में भी) **मौक़े की बात थी मगर** (वो तो बेहूदा बात बकते रहे इस लिए) **उन को अल्लाह त़ाला ने उन के कुफ़्र की वजह से अपनी** (ख़ास) **रहमत से दूर फेंक दिया अब वो ईमान न लाएंगे हां मगर थोड़े से** (आदमी इस वजह से कि वो इन बातों से दूर रहे जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथ वाले) **आदमी(46) ऐ** (पिछली आसमानी) **किताब वालो तुम इस किताब** (यानी क़ुरआन) **पर ईमान लाओ जिस को हम ने** (अब) **उतारा है जो तुम्हारे पास पहले से मौजूद** (आसमानी) **किताब की तस्दीक़ करती है** (यानी असल किताब की जो बदली नहीं गई और तुम क़ुरआन पर) **इससे पहले पहले** (ईमान ले आओ) **कि हम** (तुम्हारे) **चेहरों** (के नक़्शे यानी आंख नाक) **को बिल्कुल मिटा कर उन्हें गुद्दी जैसा बना दें या उन** (ईमान न लाने वालों) **पर हम ऐसी फिटकार डाल दें जैसी फिटकार उन हफ़्ते वालों पर डाली थी** (जो यहूदियों में हो चुके हैं, जिस का बयान सूरह बक़र में

आ चुका है यानी उन की तरह इन को भी बन्दर की सूरत बना दें), **और अल्लाह तआ़ला का** (जो) **हुक्म** (जारी हो जाता है वो) **पूरा ही हो कर रहता है** (इसलिए तुम को डरना चाहिए और ईमान ले आना चाहिए)(47)।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا
عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَ لَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ كَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ وَ يَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ؕ وَ مَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾

आयत न० 48 से 52

**बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात को** (सज़ा देकर भी) **न बख़्शेंगे कि उन के साथ किसी को साझी बनाया जाए** (बल्कि सदा-सदा की सज़ा में रक्खेंगे) **और इस के सिवा और जितने गुनाह हैं** (चाहे छोटे हों या बड़े) **जिस के लिए चाहेंगे** (बिना सज़ा) **वो गुनाह मुआ़फ़ कर देंगे** (अलबत्ता अगर वो मुशरिक मुसलमान हो जाए तो फिर मुशरिक ही न रहा अब वो सदा की सज़ा भी न रहेगी), **और** (इस शिर्क के मुआ़फ़ न करने की वजह यह है कि) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला के साथ** (किसी को) **साझी बनाता है उस ने बड़े गुनाह का काम किया** (जो मुआ़फ़ी के क़ाबिल नहीं)(48) **क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने आप को** (बड़ा) **पाकीज़ा बताते हैं** (उन के बताने से कुछ नहीं होता), **बल्कि अल्लाह तआ़ला जिस को चाहें पाकीज़ा बता दें** (और कुरआन में मोमिन को पाकीज़ा बता चुके हैं जैसे सूरह आला में) **और** (इन यहूदियों को क़ियामत में इस झूटे दावे पर जो सज़ा होगी उस सज़ा में) **उन पर धागे के बराबर भी ज़ुल्म न होगा** (यानी वो सज़ा उन के जुर्म से ज़्यादा नहीं है)(49) **देखो तो** (इस दावे में) **ये अल्लाह पर कैसा झूटा इल्ज़ाम लगाते हैं** (कि काफ़िर होने के बावजूद अपने आप को अल्लाह का प्यारा बताते हैं भला क्या अल्लाह तआ़ला कुफ़्र को पसन्द करेंगे), **और ये ही बात** (कि अल्लाह तआ़ला पर झूटा इल्ज़ाम लगाया जाए) **खुला मुजरिम होने के लिए काफ़ी** (है फिर क्या इतनी बड़ी बात पर ऐसी सज़ा कुछ ज़ुल्म ज़्यादती) **है(50) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन को** (अल्लाह की) **किताब** (यानी तौरेत के इल्म) **का एक हिस्सा मिला है** (फिर इसके बावजूद) **वो बुत और शैतान को मानते हैं** (क्योंकि

उन्होंने बुतपरस्ती को अच्छा बताया) **और वो लोग** (यानी किताब वाले) **काफ़िरों** (यानी मुशरिकों) **के बारे में कहते हैं कि ये लोग मुसलमानों के मुक़ाबिले ज़्यादा सही रास्ते पर हैं(51) ये लोग** (जिन्होंने कुफ़्र के तरीक़े को इस्लामी तरीक़े से अच्छा बताया) **वो हैं जिन पर अल्लाह तआला ने फिटकार डाल रक्खी है** (उसी फिटकार का असर है कि बेझिजक कुफ़्र की बातें बकते हैं) **और अल्लाह तआला जिस पर फिटकार डाल दें उस का** (अज़ाब के वक़्त) **कोई मददगार न पाओगे(52)।**

**नोटः-** यहूदियों के सरदार ने मुशरिकों के पूछने पर उनके दीन को मुसलमानों के दीन से अच्छा बताया था और अल्लाह की पनाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गुमराह बताया था।

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ
مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

आयत न० 53 से 55

**क्या उन लोगों को** (दुनिया की) **बादशाही का कुछ हिस्सा मिला हुआ है,** (अगर ऐसा होता) **तो दूसरे लोगों को ज़रा सी चीज़ भी न देते(53) या दूसरे लोगों से** (जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) **उन चीज़ों पर जलते हैं जो अल्लाह तआला ने उन को अपनी महरबानी से दी हैं, तो** (आप को ऐसी चीज़ मिल जाना कोई नई बात नहीं क्योंकि) **हम ने** (पहले से हज़रत) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के ख़ानदान** (वालों) **को** (आसमानी) **किताब भी दी है और इल्म भी दिया है और हमने उन को बड़ी भारी हुकूमत भी दी** (है जैसा कि बनी इस्राईल में बहुत से नबी हुए और बहुत से नबी बादशाह भी हुए जैसे हज़रत यूसुफ़, हज़रत दाऊद व हज़रत सलेमान अलैहिमुस्सलाम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं तो आप को ये नेमतें मिल जाने में अचम्भे की क्या बात) **है(54) तो** (उन पैग़म्बरों के ज़माने में भी जो लोग मौजूद थे) **उन में से कुछ तो उस** (किताब व हिकमत) **पर ईमान लाए और कुछ ऐसे थे कि उससे मुंह मोड़े ही रहे** (बस अगर आप की पैग़म्बरी व क़ुरआन पर भी आप के ज़माने के कुछ लोग ईमान न लाएं तो कोई दुख की बात नहीं)**, और** (इन काफ़िरों को अगर दुनिया में सज़ा कम भी हो या न हो तो क्या हुआ उन के लिए आख़रत में) **दोज़ख़ की दहकती आग** (की सज़ा) **काफ़ी है(55)।**

**नोटः-** अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो रूतबा दिया था उस पर यहूदी जलते थे इसलिए जानते बूझते ईमान नहीं लाए।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا
الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٥٦ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّ نُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ۝٥٧

आयत न० 56 से 57

**बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों** (व हुक्मों) **का इनकार किया** (हम उन को) **जल्दी ही एक** (दहकती) **आग में डालेंगे,** (और वहां उन की बराबर यह हालत रहेगी कि) **जब एक बार उन की खाल** (आग से) **जल चुकेगी तो हम उस पहली खाल की जगह फ़ौरन दूसरी** (ताज़ी) **खाल पैदा कर देंगे ताकि** (सदा) **सज़ा ही भुगतते रहें** (क्योंकि पहली खाल जलने के बाद शक हो सकता था कि शायद अब तकलीफ़ न हो), **बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (कुदरत वाले) **हैं** (कि ऐसी सज़ा दे सकते हैं और) **हिकमत वाले हैं(56) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये हम उन को जल्दी ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी** (वो) **उन में सदा रहेंगे, उन के वास्ते उन** (बाग़ों) **में पाक-साफ़ बीवियां होंगी और हम उन को बहुत घने साये** (की जगह) **में दाख़िल करेंगे(57)।**

**नोटः-** जहन्नमी लोगों की खाल जल जाने के बाद दूसरी नई खाल पैदा हो जाने के बारे में हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि यह काम एक दिन में सत्तर हज़ार बार होगा। साइंस रिसर्च से पता चला है कि ऊपर खाल जल जाने के बाद तकलीफ़ और जलन कम हो जाती है क्योंकि नसों के किनारे (नर्व रेन्डिंग) जल जाते हैं।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝٥٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي
الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٥٩

आयत न० 58 से 59

(ऐ हाकिमों) **बेशक तुम को अल्लाह तआ़ला इस बात का हुक्म देते हैं कि हक़ वालों को उन के हक़** (व अमानतें जो तुम्हारे ज़िम्मे हैं) **पहुंचा दिया करो और** (तुम को) **यह** (भी हुक्म देते हैं) **कि जब लोगों का फ़ैसला किया करो तो इन्साफ़ से फ़ैसला किया करो, बेशक अल्लाह तआ़ला जिस बात की तुम को नसीहत करते हैं वो बात बहुत अच्छी** (है दुनिया के हिसाब से भी कि इसमें हुकूमत बनी रहेगी और आख़रत के हिसाब से भी कि सवाब) **है, बेशक अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी बातों को) **अच्छी तरह सुनते हैं** (और तुम्हारे कामों को) **अच्छी तरह देखते हैं** (तो अगर ग़लती करोगे तुम को सज़ा देंगे)(58) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह तआ़ला का कहना मानो और** (उसके) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का कहना मानो** (यह हुक्म तो सब के लिए है) **और तुम** (मुसलमानों) **में जो लोग हाकिम हैं उन का भी** (कहना मानो यह हुक्म आम लोगों के लिए है), **फिर अगर** (इन हुक्मों में से) **किसी बात में तुम आपस में झगड़ने लगो** (कि यह बात अल्लाह व रसूल के कहने के हिसाब से है या नहीं) **तो** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में तो आप से पूछ कर और आप के बाद दीन के आलिमों से मिल कर) **उस बात को अल्लाह** (की किताब) **और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत) **की तरफ़ हवाला कर लिया करो** (उन से जैसा फ़तवा मिले उस को सब मान लें) **अगर तुम अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो** (क्योंकि ईमान का तक़ाज़ा ये ही है कि क़ियामत की पकड़ से डरें), **ये बातें** (जो बताई गईं अल्लाह व रसूल और हाकिमों व आलिमों का कहना मानने की) **सब** (दुनिया में भी) **अच्छी हैं और** (आख़रत में भी) **उन का अन्जाम अच्छा** (है दुनिया में अमन चैन और आख़रत में कामयाबी) **है**(59)।

**नोटः-** उस्मान बिन तलहा पर ख़ाना काबा की देख रेख की ज़िम्मेदारी थी और ख़ाना काबा की चाबी उन्हीं के पास रहती थी एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ाना काबा के अन्दर नमाज़ पढ़नी चाही तो उस्मान बिन तलहा ने चाबी देने से इनकार कर दिया उस वक़्त तक वो मुसलमान न हुए थे बाद में जब मक्का जीत लिया गया और हुकूमत हुज़ूर की हुई तो आप जिसे चाहे चाबी दे सकते थे उस वक़्त ये आयतें उतरीं और आपने चाबी उस्मान बिन तलहा को देदी वो भी उस वक़्त मुसलमान हो चुके थे और कहा कि तुम ही इसके मुतवल्ली रहोगे और तुम्हारे बाद तुम्हारी औलाद रहेगी।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى
الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ط وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمْ
مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ
الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي
أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾

आयत न० 60 से 65

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा जो** (ज़बान से तो) **दावा करते हैं कि वो** (यानी हम) **इस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो आप की तरफ़ उतारी गई** (यानी क़ुरआन) **और उस किताब पर भी** (ईमान रखते हैं) **जो आप से पहले उतारी गई** (यानी तौरेत फिर इस पर हालत यह है कि) **अपने मुक़द्दमे** (फ़ैसले के लिए) **शैतान के पास ले जाना चाहते हैं** (यानी शरीअ़त के ख़िलाफ़ फ़ैसला चाहते हैं) **हालांकि उन को** (शरीअ़त की तरफ़ से) **यह हुक्म हुआ कि उस** (शैतान) **को न मानें** (यानी उस के कहने पर न चलें)**, और शैतान** (उन का ऐसा दुशमन और बुरा चाहने वाला है कि) **उन को** (सीधे रास्ते से) **भटका कर बहुत दूर ले जाना चाहता है(60) और जब उन से कहा जाता है कि आओ उस हुक्म की तरफ़ जो अल्लाह तआ़ला ने उतारा है और** (आओ) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की तरफ़** (कि आप उस हुक्म के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दें) **तो आप उस वक़्त** (उन) **मुनाफ़िक़ों की यह हालत देखेंगे कि आप** (के पास आने) **से कतराते हैं(61) फिर कैसी जान को बनती है जब उन पर कोई मुसीबत पड़ती है उन की उस करतूत की वजह से जो** (इस मुसीबत से) **पहले कर चुके थे फिर** (बातें बनाते हुए) **आप के पास आते हैं अल्लाह की क़समें खाते हुए कि** (हम जो दूसरी जगह चले गये थे) **हमारा और कुछ इरादा न था सिवा इस के कि** (दोनों फ़रीक़ों की) **कोई भलाई** (की सूरत) **निकल आए और** (उन में) **आपस में मेल हो जाए** (वर्ना हम शरीअ़त को

नाहक़ समझ कर नहीं गये)(62) **ये वो लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला को पता है जो कुछ** (निफ़ाक़ व कुफ़्र) **उनके दिलों में है, सो आप उन की बात पर ध्यान न दीजिए** (यानी उन की ग़लती पर कुछ पकड़ न कीजिए) **और** (वैसे पैग़म्बर होने की हैसियत से) **उन को नसीहत करते रहिए** (कि इन ग़लतियों को छोड़ दो) **और उन से ख़ास उन के** (सुधार के) **काम की बात कह दीजिए** (फिर भी न मानें तो वो जानें)(63) **और हम ने तमाम पैग़म्बरों को ख़ास इसी वास्ते भेजा है कि अल्लाह के हुक्म से उन का कहना माना जाए** (बस पहले तो उन लोगों को शुरू से ही कहना मानना ज़रूरी था), **और अगर** (ग़लती हो ही गई थी तो) **जिस वक़्त** (ये गुनाह करके) **अपना नुक़सान कर बैठे थे उस वक़्त** (पछता कर) **आप के पास आजाते फिर** (हाज़िर हो कर) **अल्लाह तआ़ला से** (अपने इस गुनाह की) **मुआ़फी चाहते और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यानी आप भी) **उन के लिए अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी की दुआ़ करते तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला को तौबा का क़ुबूल करने वाला और रहमत करने वाला पाते**(64) **सो क़सम है आप के रब की** (ऐ पैग़म्बर) **ये लोग** (जो सिर्फ़ ज़बानी ईमान दिखाते फिरते हैं अल्लाह के यहां) **ईमानदार न होंगे जब तक यह बात न हो कि उन के आपस में जो झगड़ा हो उस में ये लोग आप से** (और आप न हों तो आप की शरीअ़त से) **फ़ैसला कराएं फिर** (जब आप फ़ैसला कर दें तो) **उस आप के फ़ैसले से अपने दिलों में** (इनकार की) **तंगी न पाएं और** (उस फ़ैसले को) **पूरा-पूरा** (खुले तौर पर भी और दिल से भी) **मान लें**(65)।

**नोटः-** बशर नाम के एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा हो गया बात फ़ैसले की आई तो उसने मुसलमान होने का दावा करने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मानने से इनकार कर दिया और यहूदियों के सरदार काब बिन अशरफ़ से फ़ैसला कराने के लिए कहा जो कि शैतान का चेला था फिर बात हज़रत उमर पर आई तो आप ने उस मुनाफ़िक़ के क़त्ल का फ़ैसला दिया और कहा जो मुसलमान होने का दावा करने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैसला न माने उसके लिए उमर का फ़ैसला ये ही है फिर जब ये आयतें उतरीं तो हज़रत उमर के फ़ैसले की तसदीक़ हो गई।

وَ لَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَ لَوْ اَنَّهُمْ
فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَ اَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿۶۶﴾ۙ وَّ اِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۶۷﴾ۙ وَّ

لَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

आयत न० 66 से 68

**और हम अगर लोगों पर यह बात फ़र्ज़ कर देते कि तुम अपने आप को क़त्ल करो या अपने घर** (और वतन) **से निकल जाओ तो सिवाए थोड़े लोगों के** (जो पूरे मोमिन होते) **इस हुक्म को कोई भी अदा न कर पाता** (इससे साबित हुआ पूरा कहना मानने वाले कम होते हैं), **और अगर ये** (मुनाफ़िक़) **लोग जो कुछ इन को** (दिलो जान से रसूल का कहना मानने की) **नसीहत की जाती है उस काम को करते तो उन के लिए** (दुनिया में तो सवाब की वजह से) **अच्छा होता और** (उनके) **ईमान को ज़्यादा पक्का करने वाला होता** (क्योंकि दीन का काम करने से ईमान व यक़ीन को तरक़्क़ी होती है)(66) **और इस हालत में हम उन को ख़ास अपने पास से बड़ा सवाब देते**(67) **और हम उन को** (जन्नत का) **सीधा रास्ता बता देते** (कि बे रोकटोक जन्नत में दाख़िल हो जाएं जो कि बड़ा बदला मिलने की जगह है)(68)।

**नोटः-** लिखा है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह आयत सुन कर कहा कि अगर यह हुक्म आजाता तो अल्लाह की क़सम सबसे पहले मैं अपने आप को और अपने घर वालों को इस हुक्म पर क़ुर्बान कर देता।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَ
الصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾

आयत न० 69 से 70

**और जो आदमी** (ज़रूरी हुक्मों में भी) **अल्लाह व रसूल का कहना मानेगा** (चाहे ज़्यादा इबादत करके बड़े दर्जे को न पहुंच सके) **तो ऐसे लोग भी** (जन्नत में) **उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लह तआला ने** (पूरा) **इनाम किया है यानी पैग़म्बर** (अलैहिमुस्सलाम) **और सिद्दीक़ लोग** (उम्मत में जिन का रुतबा ज़्यादा होता है) **और शहीद लोग** (जिन्होंने दीन की मुहब्बत में अपनी जान तक देदी) **और नेक लोग** (जिन को दीनदार कहा जाता है) **और ये लोग** (जिसके साथ हों) **बहुत अच्छे साथी हैं**(69) **यह महरबानी है अल्लाह तआला की तरफ़ से** (यानी नेक कामों का बदला नहीं बल्कि यह इनाम है कि जन्नत में इन लोगों का साथ नसीब हो), **और अल्लाह तआला काफ़ी जानने वाले हैं** (कि किसको कितना इनाम दिया जाए)(70)

**नोटः**- एक सहाबी ने एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मेरे दिल में आप की मुहब्बत अपनी जान से भी ज़्यादा है और जन्नत में आप का दर्जा बहुत बड़ा होगा तो वहां आप की ज़ियारत न कर सकूंगा तो मुझे कैसे सब्र आएगा इसके बाद ये आयतें उतरीं और हुज़ूर ने उन को ख़ुशख़बरी सुनाई कि ताबेदारों को जन्नत में पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेक लोगों के साथ मुलाक़ात के मौक़े मिलेंगे। (इब्ने कसीर)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ۝٧١ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ
مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝٧٢ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ
لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧٣ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا
عَظِيْمًا ۝٧٤ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۤءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيْرًا ۝٧٥ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْۤا اَوْلِيَاۤءَ
الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝٧٦

आयत न० 71 से 76

**ऐ ईमान वालो** (दुशमन से मुक़ाबिले के वक़्त) **अपने बचाव का सामान साथ रक्खो** (यानी ज़रूरी हथियार साथ रक्खो और चौकस भी रहो) **फिर** (उन से जंग के लिए) **छोटी-छोटी टुकड़ी या फ़ौज लेकर** (जैसा मौक़ा हो) **निकलो(71) और तुम में कोई आदमी ऐसा है** (यानी मुनाफ़िक़) **जो सुस्ती दिखाता है** (यानी जिहाद के लिए नहीं जाता) **फिर अगर तुम को कोई मुसीबत पहुंच जाए** (जैसे जंग में हार गये) **तो** (अपने न जाने पर ख़ुश होकर) **कहता है बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर बड़ी महरबानी की जो मैं उन लोगों के साथ** (लड़ाई में) **नहीं गया** (नहीं तो मुझ पर भी मुसीबत आती)**(72) और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी हो जाती है** (यानी जीत व ग़नीमत का माल मिलता है) **तो इस तरह कि जैसे तुम में और उसमें कोई दोस्ती ही नहीं** (माल न मिलने पर दुखी होकर) **कहता है हाय क्या अच्छा होता कि मैं भी इन लोगों के साथ होता** (यानी जिहाद में जाता) **तो मुझ को भी बड़ी कामयाबी होती** (कि माल व दौलत

लाता)(73) **तो** (अगर बड़ी कामयाबी चाहता है तो) **उस आदमी को चाहिए कि अल्लाह की राह** (यानी दीन के लिए सच्चा मुसलमान बन कर) **उन** (काफ़िर) **लोगों से लड़े जो आख़रत** (छोड़ कर उस) **के बदले दुनिया की ज़िन्दगी अपनाए हुए हैं, और जो आदमी अल्लाह की राह में लड़ेगा फिर चाहे** (हार जाए यहां तक कि चाहे) **जान** (ही) **से मारा जाए या जीत जाए हम** (हर हालत में) **उस को** (आख़रत का) **बड़ा सवाब देंगे** (जो कि सबसे बड़ी कामयाबी है)(74) **और** (ऐ मुसलमानो) **तुम्हारे पास क्या मजबूरी है कि तुम जिहाद न करो** (बावजूद इस के कि यह जिहाद) **अल्लाह की राह में** (होता है) **और कमज़ोरों** (यानी मजबूर मुसलमानों) **के लिए** (भी लड़ना ज़रूरी है ताकि काफ़िरों के ज़ुल्म से छुटकारा पाएं) **जिन** (बेचारों) **में कुछ** (कमज़ोर) **मर्द है कुछ औरते हैं और कुछ बच्चे हैं जो** (काफ़िरों से तंग व परीशान हो हो कर) **दुआ कर रहे हैं कि हमारे रब हम को** (किसी तरह) **इस बस्ती से** (यानी मक्के से जो कि हमारे लिए जेल ख़ाना बना हुआ है) **बाहर निकाल लीजिए जिसके रहने वाले सख़्त ज़ालिम हैं** (कि हम पर सितम कर रहे हैं)**, और हमारे लिए कोई हिमायती भेज दीजिए और हमारे लिए ग़ैब से किसी मददगार को भेज दीजिए** (कि हमारी मदद करके इन ज़ालिमों के पन्जे से छुड़ा दे)(75) **जो लोग पक्के ईमानदार हैं** (वो तो इन हुक्मों को सुन कर) **अल्लाह की राह में** (यानी इस्लाम के लिए) **जिहाद करते हैं और जो लोग** (उन के मुक़ाबिले में) **काफ़िर हैं शैतान की राह में** (यानी कुफ़्र के लिए) **लड़ते हैं** (और साफ़ बात है कि इन दोनों में अल्लाह की मदद ईमानदारों को होगी) **तो** (ऐ ईमानदारो) **तुम शैतान के साथियों से** (यानी काफ़िरों से) **जिहाद करो** (और वो भी जीत की कोशिश करते हैं लेकिन) **असलीयत में शैतानी चाल** (ख़ुद) **कमज़ोर होती है** (क्योंकि उसमें ग़ैब की मदद नहीं होती)(76)

**नोटः-** यहां जिहाद का हुक्म कमज़ोर मुसलमानों को ज़ालिम काफ़िरों के ज़ुल्म व सितम से बचाने के लिए दिया गया।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْ لَآ
اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَيْنَ مَا
تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَا لِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ

حَدِيۡثًا ۝٧٨ مَآ اَصَابَكَ مِنۡ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۖ وَ مَآ اَصَابَكَ مِنۡ سَيِّئَةٍ فَمِنۡ نَّفۡسِكَ ؕ وَ اَرۡسَلۡنٰكَ لِلنَّاسِ
رَسُوۡلًا ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ۝٧٩

आयत न० 77 से 79

**क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा** (कि जिहाद का हुक्म आने से पहले तो जंग का ऐसा जोश था कि) **उन को** (मना करने के लिए) **यह कहा गया था कि** (अभी) **अपने हाथों को** (लड़ने से) **रोके रहो और** (जो हुक्म हो चुके हैं उसमें लगे रहो जैसे) **नमाज़ों की पाबन्दी रक्खो ज़कात देते रहो** (या तो यह हालत थी और या) **फिर** (जब) **उन पर जिहाद करना फ़र्ज़ कर दिया गया तो क्या हाल हुआ कि उनमें से कुछ आदमी** (दुशमन) **लोगों से ऐसा डरने लगे** (कि हम को मार देंगे) **जैसा** (कोई) **अल्लाह तआ़ला से डरता हो बल्कि उससे भी ज़्यादा डरना, और यह कहने लगे** (चाहे ज़बान से या दिल से) **कि या रब हमारे आपने अभी से हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया हम को** (अपनी महरबानी से) **और थोड़े दिनों की मोहलत देदी होती** (ज़रा बेफ़िक्री से अपनी ज़रूरतें पूरी कर लेते)**, आप कह दीजिए** (ऐ पैग़म्बर) **कि दुनिया से नफ़ा उठाना** (जिसके लिए तुम मोहलत की तमन्ना करते हो) **सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए है और आख़रत** (जिसको पाने का सब से अच्छा सामान जिहाद है) **हर तरह से अच्छी है** (मगर वो) **उस आदमी के लिए** (है) **जो अल्लाह तआ़ला** (के हुक्मों) **की मुख़ालफ़त से बचे, और तुम पर ज़रा भी ज़ुल्म न किया जाए**(गा यानी जितने नेक काम होंगे उन का पूरा-पूरा सवाब मिले)**गा**(77) (और मौत की तो यह हालत है कि) **तुम चाहे कहीं भी हो वहां मौत आ दबाएगी चाहे पक्के मज़बूत क़िलों ही में** (क्यों न) **हों, और अगर इन** (मुनाफ़िकों को) **कोई अच्छी हालत का सामना हो** (जैसे जीत व कामयाबी) **तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से** (अचानक) **हो गई** (वर्ना मुसलमानों की बेइन्तिज़ामी में तो कोई कमी नहीं थी) **और अगर किसी बुरी हालत का सामना होता है** (जैसे जिहाद में क़त्ल व हार) **तो** (ऐ पैग़म्बर नऊज़ुबिल्लाह आप के बारे में) **कहते हैं कि यह आप** (की और मुसलमानों की ग़लती) **की वजह से है** (वर्ना चैन से घरों में बैठे रहते तो क्यों मुसीबत में पड़ते)**, आप कह दीजिए कि** (हार जीत) **सब कुछ अल्लाह ही की तरफ़ से है, तो इन** (बेवक़ूफ़) **लोगों को क्या हुआ कि बात समझने के पास को भी नहीं आते**(78) (ऐ इन्सान) **तुझ को जो कोई अच्छाई मिले तो वो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से** (महरबानी) **है और जो कोई तकलीफ़ पहुंचे तो वो तेरी ही** (बुरी करतूतों की) **वजह से है, और** (ऐ पैग़म्बर) **हम ने आप को सब लोगों की तरफ़ रसूल**

**बना कर भेजा है, और** (अगर कोई मुनाफ़िक़ या काफ़िर इनकार करे तो क्या होता है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (आप की पैग़म्बरी के) **गवाह काफ़ी** (हैं जिन्होंने क़ुरआन में भी गवाही दी और पैग़म्बरी के सबूत में मोजिज़े भी दिये) **हैं**(79)।

**नोटः-** यहां मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी दुनिया के इन्सानों के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा गया चाहे उस वक़्त मौजूद हों या आगे को क़ियामत तक पैदा हों।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ﴿۸۰﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا
مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ تَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۸۱﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَ لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿۸۲﴾

आयत न० 80 से 82

**जिस आदमी ने रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का कहना माना उस ने अल्लाह तआ़ला का कहना माना** (और जिसने रसूल का कहना न माना उसने अल्लाह तआ़ला का कहा न माना), **और** (ऐ पैग़म्बर) **जो आदमी** (आप की ताबेदारी से) **मुंह मोड़े तो** (आप कुछ ग़म न कीजिए क्योंकि हमने) **आप को उन का पहरेदार बना कर नहीं भेजा** (कि आप उन को कुफ़्र न करने दें बल्कि आप की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ बात पहुंचा देना है अगर इसके बाद भी वो कुफ़्र करें तो आप से कोई पूछताछ न होगी)(80) **और ये** (मुनाफ़िक़) **लोग** (आप के हुक्मों को सुन कर आपके सामने ज़बान से तो) **कहते हैं कि हमारा काम** (आप का) **कहना मानना है, फिर जब आप के पास से** (उठ कर) **बाहर जाते हैं तो रात के वक़्त** (छुप कर) **मशवरे करते हैं उन में के कुछ लोग** (यानी उन के सरदार) **उस के ख़िलाफ़ जो कुछ ज़बान से कह चुके थे, और अल्लाह तआ़ला** (सरकारी रजिस्टर में) **लिखते जाते हैं जो कुछ वो रातों को मशवरे किया करते हैं** (मौक़े पर सज़ा देंगे) **सो आप उन की** (इन बातों की) **तरफ़ ध्यान न कीजिए और** (न कुछ फ़िक्र कीजिए बल्कि) **अल्लाह तआ़ला पर भरोसा कीजिए, और अल्लाह तआ़ला ही** (हर) **काम** (के) **बनाने वाले हैं** (वो ख़ुद देख लेंगे बस उन की शरारतों से कभी कोई नुक़सान नहीं पहुंचा)(81) **क्या ये लोग क़ुरआन में ग़ौर फ़िक्र** (यानी सोच विचार) **नहीं करते** (ताकि उस का अल्लाह का कलाम होना समझ में आजाए), **और अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इस** (की बातों) **में बहुत फ़र्क़ पाते** (कि कहीं कुछ बयान है तो कहीं कुछ मगर ऐसा नहीं बस अल्लाह के सिवा दूसरे

का कलाम नहीं हो सकता)(82)।

**नोटः-** यहां सब लोगों को क़ुरआन में ग़ौर करने उस का मतलब समझने को कहा गया अलबत्ता समझने के दर्जे अलग-अलग हैं, आ़म लोगों के लिए ग़लत समझ जाने और मुग़ालतों से बचने के लिए बेहतर है कि किसी आ़लिम से क़ुरआन सबक़-सबक़ पढ़ें ये न होसके तो आ़लिमों से पूछ कर किसी तफ़सीर को पढ़ें और जहां कोई शुबह हो जाए अपनी राय से फ़ैसला न करें और आ़लिमों से पूछ लें।

وَ اِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ
الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۳﴾

आयत न० 83

**और जब उन को किसी** (नई) **बात का पता चलता है चाहे** (वो बात) **अमन** (की) **हो या डर** (की) **हो** (जैसे कोई फ़ौज मुसलमानों की किसी जगह जिहाद के लिए गई और उन की जीत की ख़बर आई यह अमन की ख़बर हुई या उन की हार होने की ख़बर आई यह डर की ख़बर है) **तो उस** (ख़बर) **को** (फ़ौरन) **मशहूर कर देते हैं** (हालांकि कभी-कभी वो ग़लत निकलती है और अगर सही भी हुई तब भी कभी उस का मशहूर करना ठीक नहीं होता), **और अगर** (बजाए ख़ुद मशहूर करने के) **ये लोग** (उस) **ख़बर को रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के और जो** (बड़े सहाबा) **उनमें से बात को समझ लेते हैं उन** (की राय) **पर छोड़ देते** (और ख़ुद कुछ दख़ल न देते) **तो उस** (ख़बर के सही ग़लत होने और मशहूर करने न करने) **को वो लोग तो पहचान ही लेते जो उन में उस को जांच लिया करते हैं, और अगर तुम लोगों पर अल्लाह तआ़ला की** (यह ख़ास) **महरबानी और रहमत न होती** (कि तुम को क़ुरआन दिया और पैग़म्बर भेजा) **तो तुम सब के सब** (दुनिया व आख़रत का नुक़सान उठा कर) **शैतान के पीछे हो लेते सिवाए थोड़े से लोगों के**(83)।

नोटः- इस से मालूम हुआ कि हर सुनी सुनाई बात को बिना असलीयत जाने बयान नहीं करना चाहिए। एक हदीस में है कि "किसी इन्सान के झूटा होने के लिए इतनी ही बात काफ़ी है कि वो हर सुनी सुनाई बात बिना असलीयत जाने बयान कर दे"। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ
وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

आयत न० 84

**बस** (जब जिहाद की ज़रूरत मालूम हुई तो) **आप** (ऐ पैग़म्बर) **अल्लाह के रास्ते में** (काफ़िरों से) **जंग कीजिए** (और अगर मान लो कोई आप के साथ न हो तो कुछ फ़िक्र न कीजिए क्योंकि) **आप पर अपने सिवा** (किसी दूसरे आदमी के कामों की) **कोई ज़िम्मेदारी नहीं और** (इसके साथ) **मुसलमानों को** (सिर्फ़) **समझा दीजिए** (फिर अगर कोई साथ न दे तो आप से कोई पूछताछ न होगी और न अकेले रह जाने का ग़म कीजिए जिस की वजह यह है कि) **अल्लाह तआला से उम्मीद है** (और यह उम्मीद वादा दिलाना है) **कि काफ़िरों के जंग के ज़ोर को रोक देंगे** (और उन को हरा देंगे)**, और** (चाहे ये बड़े ताक़त वाले दिखाई देते हैं लेकिन) **अल्लाह तआला जंग के ज़ोर में** (कहीं) **ज़्यादा सख़्त** (और ताक़त वाले) **हैं और** (मुख़ालिफ़ को) **सख़्त सज़ा देते हैं**(84)।

**नोटः-** जंगे उहद के बाद जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों की दी हुई धमकी पर जंग के लिए जाना चाहा तो कुछ लोगों ने हिम्मत हार दी इस पर यह आयत उतरी तब जंग के लिए निकले और दुशमनों के दिलों में अल्लाह ने रौब डाल दिया वो डर गये मुक़ाबिले पर नहीं आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों के साथ सलामती से वापस आ गये।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَ كَانَ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَ اِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾

आयत न० 85 से 87

**जो आदमी अच्छी सिफ़ारिश करे** (यानी जाइज़ काम के लिए जाइज़ तरीक़े पर सिफ़ारिश करे) **उस को उस** (सिफ़ारिश) **की वजह से** (सवाब का) **हिस्सा मिलेगा, और जो आदमी बुरी सिफ़ारिश करे** (यानी नाजाइज़ काम के लिए नाजाइज़ सिफ़ारिश करे) **उस को उस** (सिफ़ारिश) **की वजह से** (गुनाह का) **हिस्सा मिलेगा, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले** (हैं वो अपनी कुदरत से नेकी पर सवाब और बुराई पर अज़ाब दे सकते) **हैं**(85) **और जब तुम को**

**कोई** (शरई तरीक़े पर) **सलाम करे तो उस** (सलाम) **से अच्छे तरीक़े से सलाम करो** (यानी लफ़्ज़ बढ़ा कर जवाब दो जैसे उसने अस्सलामु अलैकुम कहा तुम वअलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाह कहो) **या** (जवाब में कम से कम) **वैसे ही बोल कह दो** (दोनों बातों में से जो चाहो), **बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर** (यानी हर काम पर) **हिसाब लेंगे** (यानी उन का क़ानून ये ही है और यूं अपनी महरबानी से मुआ़फ़ कर दें वो और बात है)(86) **अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि उन के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, वो ज़रूर तुम सब को जमा करेंगे क़ियामत के दिन इसमें कोई शक नहीं, और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किस की बात सच्ची होगी** (जब वो ख़बर दे रहे हैं तो बिल्कुल ठीक ही है)(87)।

**नोटः-** किसी मुसलमान की ज़रूरत के लिए दुआ़ मांगना भी अच्छी सिफ़ारिश में दाख़िल है और दुआ़ करने वाले को भी सवाब मिलता है।

एक हदीस में है कि "जब कोई आदमी अपने भाई मुसलमान के लिए भलाई की दुआ़ करता है तो फ़रिशता कहता है कि अल्लाह तआ़ला तेरी भी ज़रूरत पूरी करें"। तो जब दुआ और सिफ़ारिश करने पर सवाब मिलता है तो ख़ुद किसी के काम में कोशिश करने का कितना सवाब होगा। (मज़हरी)

एक हदीस में है कि बड़ा कंजूस वो आदमी है जो सलाम में भी कंजूसी करे। (तिबरानी)

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ
حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ
يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَ
اَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَ
يَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا
اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۱﴾ ع

आयत न० 88 से 91

(जब तुम इस्लाम से फिरने वालों की हालत देख चुके) **फिर तुम को क्या हुआ कि इन मुनाफ़िक़ों के बारे में तुम** (अलग-अलग राय करके) **दो गिरोह हो गये** (एक गिरोह उन को अब भी मुसलमान कहता है) **हालांकि अल्लाह तआ़ला ने उन को** (उन के खुले कुफ़्र की तरफ़) **उल्टा फेर दिया उन के** (बुरे) **कामों की वजह से** (वो बुरा काम जान बूझ कर इस्लाम को छोड़ देना है और सच तो यह है कि वो पहले भी मुसलमान न हुए थे इसी लिए उन को मुनाफ़िक़ कहा), **क्या तुम लोग इस का इरादा रखते हो कि ऐसे लोगों को राह पर लाओ जिन को अल्लाह तआ़ला ने** (जब कि उन लोगों ने गुमराही चाही) **गुमराही में डाल रक्खा है, और जिस को अल्लाह तआ़ला गुमराही में डाल दें उसके** (मोमिन होने के) **लिए कोई राह न पाओगे(88)** (और वो भला ख़ुद क्या मोमिन होंगे उन की तो यह हालत है कि) **वो इस तमन्ना में हैं कि जैसे वो काफ़िर हैं तुम भी** (अल्लाह न करे) **काफ़िर बन जाओ जिसमें तुम और वो सब एक तरह हो जाओ सो** (उन की जब यह हालत है तो) **उन में किसी को दोस्त मत बनाना** (यानी किसी के साथ मुसलमानों का सा बरताव मत करना) **जब तक वो अल्लाह की राह में** (यानी पूरे मुसलमान होने के लिए) **हिजरत न करें** (उस वक़्त दीन के लिए हिजरत करना मुसलमान होने की निशानी था), **और अगर वो** (इस्लाम से) **मुंह मोड़ें** (और दुशमनी न छोड़ें) **तो उन को पकड़ो और क़त्ल करो जिस जगह उन को पाओ, और न उनमें से किसी को दोस्त बनाओ और न मददगार बनाओ** (मतलब यह कि किसी हालत में उन से कोई वास्ता न रक्खो)(89) **मगर** (इन काफ़िरों में) **जो लोग ऐसे हैं जो कि** (तुम्हारे साथ मेल से) **रहना चाहते हैं** (या तो) **ऐसे लोगों से जा मिलते हैं** (यानी समझौता कर लेते हैं) **कि तुम्हारे और उन के बीच** (सुलह का) **वादा है या ख़ुद तुम्हारे पास इस हालत से आएं कि उन का दिल तुम्हारे साथ** (मिल कर अपनी क़ौम से) **और अपनी क़ौम के साथ** (मिल कर तुम से) **भी न लड़ना चाहता हो** (वो इस हुक्म पकड़ने व क़त्ल करने से अलग हैं), **और** (तुम इस बात में अल्लाह का अहसान मानो कि उन के दिल में तुम्हारा रौब डाल दिया वर्ना) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो उन को तुम पर हावी** (और दिलेर) **कर देता फिर तुम से लड़ने लगते** (मगर अल्लाह तआ़ला ने तुम को इस परीशानी से बचा लिया), **फिर अगर** (सुलह करके) **वो तुम से अलग रहें यानी तुम से न लड़ें और तुम्हारे साथ अमन से रहें तो** (इस हालत में) **अल्लाह तआ़ला ने तुम को उन पर** (क़त्ल या क़ैद की) **कोई राह नहीं** (दी यानी इजाज़त नहीं) **दी(90)** (और) **कुछ ऐसे भी तुम को ज़रूर मिलेंगे** (यानी उन की यह हालत पता चलेगी) **कि** (धोका देने

को) **वो यह** (भी) **चाहते हैं कि तुम से भी बेखटक हो कर रहें और अपनी क़ौम से भी बेखटक हो कर रहें,** (और इसके साथ ही) **जब कभी उन को** (खुले दुशमनों की तरफ़ से) **फ़साद की तरफ़ बुलाया जाता है** (यानी उन से मुसलमानों से लड़ने के लिए कहा जाता है) **तो वो** (फ़ौरन) **उस** (फ़साद) **में जा गिरते** (हैं यानी मुसलमानों से लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं और वो धोके की सुलह तोड़ देते) **हैं सो ये लोग अगर** (सुलह तोड़ दें और) **तुम से** (यानी तुम्हारी लड़ाई से) **अलग न हों और न तुम से सुलह की बात रक्खें और न अपने हाथों को** (तुम्हारे मुक़ाबिले से) **रोकें तो तुम** (भी) **उन को पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं उन को पाओ, और हम ने उन पर खुली इजाज़त देदी** (है और वजह इस इजाज़त देने की वादा तोड़ना) **है**(91)।

**नोटः-** यहां यह मालूम हुआ कि जो ग़ैर मुस्लिम मुसलमानों के साथ अमन से रहते हैं उन से जंग करने की इजाज़त नहीं। दूसरी बात यहां यह भी मालूम हुई कि दुशमनों के मुक़ाबिले में काफ़िरों से मदद मांगना हराम है जैसा कि किसी मौक़े पर जब अन्सारेमदीना ने यहूदियों से मदद मांगने की इजाज़त चाही तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि यह ख़बीस क़ौम है इस की हमें कोई ज़रूरत नहीं।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ
وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾

आयत न० 92 से 93

**और किसी मुसलमान का यह काम नहीं कि वो किसी** (दूसरे) **मुसलमान को क़त्ल** (करने की पहल) **करे लेकिन ग़लती से** (ऐसा हो जाए तो और बात है)**, और जो आदमी किसी मुसलमान को ग़लती से क़त्ल कर दे उस पर** (शरीअ़त से) **एक मुसलमान ग़ुलाम या बान्दी का आज़ाद करना** (वाजिब) **है और ख़ूं बहा** (जुर्माना भी वाजिब) **है जो उस** (मक़तूल यानी मरने वाले) **के घर वालों को** (यानी वारिसों को) **दिया जाए मगर यह कि वो लोग** (उस ख़ूंबहा को) **मुआ़फ़**

**करदें** (चाहे कुल या कुछ उतनी ही मुआफ़ी हो जाएगी), **और अगर वो मक़्तूल ऐसी क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है** (और उन्हीं मे किसी वजह से रहता था) **मगर वो ख़ुद मुसलमान हो तो बस एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना फ़र्ज़ है** (ख़ूं बहा देना वाजिब नहीं) **और अगर वो** (मक़्तूल) **ऐसी क़ौम से हो कि तुम में और उन में समझौता** (सुलह का) **हो तो ख़ूं बहा** (भी वाजिब) **है जो उस** (मक़्तूल) **के घर वालों को दिया जाए और एक ग़ुलाम या बान्दी को आज़ाद करना** (पड़ेगा), **फिर** (जिन सूरतों में ग़ुलाम बान्दी का आज़ाद करना वाजिब है) **जिस आदमी को** (ग़ुलाम बान्दी) **न मिले** (और न इतना माल हो कि ख़रीद सके) **तो** (उस के ज़िम्मे बजाए इस ग़ुलाम आज़ाद करने के) **लगातार दो महीने के रोज़े हैं,** (यह आज़ाद करना ओर वो न हो सके तो रोज़े रखना) **यह तौबा का तरीक़ा है जो अल्लाह की तरफ़ से तय है, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हिकमत वाले हैं** (अपने इल्म व हिकमत से भलाई के हुक्म तय कर दिये हैं चाहे हर हिकमत व भलाई बन्दे की समझ में न आए)(92) **और जो आदमी किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल कर डाले तो उस की** (असली) **सज़ा** (तो) **जहन्नम है कि सदा-सदा को उसमें रहेगा** (लेकिन अल्लाह तआला की महरबानी है कि यह असली सज़ा जारी न होगी बल्कि ईमान की बरकत से आख़िर मुआफ़ी हो जाएगी) **और उस पर** (एक ख़ास मुद्दत तक) **अल्लाह तआला ग़ुस्सा होंगे और उस को अपनी** (ख़ास) **रहमत से दूर करेंगे और उसके लिए बड़ी सज़ा** (यानी दोज़ख़ की सज़ा) **तैयार कर रक्खी है**(93)।

**नोटः-** जान बूझ कर किये क़त्ल में कफ़्फ़ारा (जुर्माना) नहीं बल्कि तौबा करता रहे। (बयानुल क़ुरआन)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ
تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ
فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾ لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ
الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
دَرَجَةً ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۹۵﴾ۙ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَ
مَغْفِرَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾ ع

आयत न० 94 से 96

**ऐ ईमान वालो जब तुम अल्लाह की राह में** (यानी जिहाद के लिए) **सफ़र किया करो तो हर काम को** (क़त्ल हो या और कुछ हो) **असलीयत जान करके किया करो और ऐसे आदमी को जो कि तुम्हारे सामने इस्लाम** (की निशानी) **दिखाए** (जैसे कलमा पढ़ना या मुसलमानो की तरह सलाम करना) **यह मत कह दिया करो कि यह तो** (दिल से) **मुसलमुन नहीं** (सिर्फ़ अपनी जान बचाने को झूट-मूट मुसलमान होने का दिखावा करता है क्या यह बात) **इसलिए कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान चाहते हो जब कि अल्लाह के पास** (तुम्हारे लिए) **बहुत ग़नीमत के माल हैं** (जो तुम को जाइज़ तरीक़े से मिलेंगे)**, और** (याद करो कि) **पहले तुम भी ऐसी ही थे** (कि अपना मुसलमान होना ज़बान से बताते थे) **फिर अल्लाह तआ़ला ने तुम पर अहसान किया** (कि तुम्हारे कहने को मान लिया गया) **सो** (ज़रा) **सोचो** (तो)**, बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखते हैं(94) जो मुसलमान बिना किसी मजबूरी के घरों में बैठे रहें** (यानी जिहाद में न जाएं) **और वो लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद करें** (दोनों दर्जे में) **बराबर नहीं,** (बल्कि) **अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों का दर्जा बहुत ज़्यादा बनाया है जो अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं घर में बैठने वालों के मुक़ाबिले, और** (जिहाद फ़र्ज़ न होने की सूरत में घर में बैठने वालों पर भी गुनाह नहीं बल्कि दूसरी इबादतों की वजह से) **सबसे** (यानी जिहाद करने वालों से भी और न करने वालों से भी) **अल्लाह तआ़ला ने अच्छे घर का** (यानी जन्नत का आख़िरत में) **वादा कर रक्खा है, और अल्लाह तआ़ला ने जिहाद करने वालों को घर में बैठने वालों के मुक़ाबिले बड़ा बदला दिया है(95) यानी बहुत से दर्जे जो अल्लाह की तरफ़ से मिलेंगे और** (गुनाहों की) **मुआ़फ़ी और रहमत, और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़े रहमत करने वाले हैं(96)**

**नोटः-** जब कोई आदमी ख़ुद को मुसलमान ज़ाहिर करे उस को काफ़िर कहना या समझना जाइज़ नहीं जब तक कि वो कोई ऐसा काम न करे जो कुफ़्र की यक़ीनी निशानी है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيٓ أَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْأَرْضِ ؕ قَالُوْٓا
أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَأُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾ إِلَّا
الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ فَأُولٰٓئِكَ عَسَى

اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝٩٩ وَ مَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا
وَّسَعَةً ؕ وَ مَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠٠ ع

आयत न० 97 से 100

**बेशक ऐसे लोगों की जान** (जब) **फ़रिशते निकालते हैं जिन्होंने** (हिजरत का मौक़ा होने के बावजूद हिजरत को छोड़ कर) **अपने को गुनहगार कर रक्खा था तो** (उस वक़्त) **वो** (फ़रिशते) **उन से कहते हैं कि तुम** (दीन के) **किस** (किस) **काम में** (थे यानी दीन के क्या ज़रूरी काम किया करते) **थे, वो** (लोग जवाब में) **कहते हैं कि हम** (अपने रहने की) **ज़मीन में बेबस** (थे इसलिए दीन के बहुत से ज़रूरी काम न कर सकते) **थे, वो** (फ़रिशते) **कहते हैं** (अगर इस जगह न कर सकते थे तो) **क्या अल्लाह तआ़ला की ज़मीन फ़ैली हुई न थी तुम को वतन छोड़ कर उस** (से किसी दूसरे हिस्से) **में चला जाना चाहिए था** (और वहां जाकर फ़ज़ों को अदा कर सकते थे इससे वो लाजवाब हो जाएंगे और उन का जुर्म साबित हो जाएगा)**, सो उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और जाने के लिए वो बुरी जगह है(97) लेकिन जो मर्द और औ़रतें और बच्चे** (हिजरत से सचमुच) **बेबस हों कि न कोई कोशिश कर सकते हैं न रास्ता जानते हैं(98) तो उन के लिए उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ कर दें, और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़े बख़्शने वाले हैं(99) और** (जिन लोगों के लिए हिजरत करना शरीअत से ज़रूरी है उन में से) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला की राह में** (यानी दीन के लिए) **हिजरत करेगा तो उस को ज़मीन पर जाने की बहुत जगह मिलेगी और** (दीन पर खुल कर चलने की) **बहुत गुन्जाइश** (मिलेगी)**, और जो आदमी अपने घर से इस नीयत से निकल खड़ा हो कि अल्लाह व रसूल** (के दीन पर खुल कर चलने के मौक़े) **की तरफ़ हिजरत करूंगा फिर** (पहले ही) **उस को मौत आ पकड़े तब भी उस का सवाब** (जिस का वादा हिजरत करने पर है) **साबित हो गया अल्लाह के यहां, और अल्लाह बड़े मुआ़फ़ करने वाले** (हैं इस हिजरत की बरकत से बहुत से गुनाह मुआफ़ करेंगे और) **बड़े रहमत वाले** (हैं कि नेक काम को अच्छी नीयत से शुरू करने ही से नेक काम के पूरा होने के बराबर सवाब दे देते) **हैं(100)।**

**नोटः-** आज जो कुछ हिजरत करने वाले परीशान हाल हैं या तो अभी वो हिजरत की शुरू की हालत में हैं जिसमें परीशानियां आया ही करती हैं या फिर हिजरत में उन की नीयत सही नहीं उन को

अपनी नीयत और अ़मल को सुधारना चाहिए तब वो अल्लाह तआ़ला के वादे की सच्चाई अपनी आंखों से देखेंगे।

وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝١٠١ وَ اِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ
مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَ لْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۠ وَ لْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ
يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَ لْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَ اَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَ
اَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَ خُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝١٠٢ فَاِذَا قَضَيْتُمُ
الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝١٠٣ وَ لَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَ
تَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١٠٤ ع

आयत न० 101 से 104

**और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो** (जो तीन मन्ज़िल हो यानी आज के हिसाब में साढ़े 77 किलोमीटर या ज़्यादा हो) **तो तुम को इस में कोई गुनाह न होगा** (बल्कि ज़रूरी है) **कि तुम** (ज़ुहर और अस्र और इशा के फ़र्ज़) **नमाज़** (की रकअ़तों) **को कम कर दो** (यानी चार की जगह दो पढ़ा करो), **अगर तुम को यह ख़तरा हो कि तुम को काफ़िर लोग परीशान करेंगे** (और इस ख़तरे की वजह से एक जगह ज़्यादा देर तक न ठहरना चाहो तो उस का हुक्म आगे आता है, क्योंकि) **बेशक काफ़िर लोग तुम्हारे खुले दुशमन हैं(101) और** (ऐ पैग़म्बर!) **जब आप उन में मौजूद हों** (और इसी तरह आप के बाद जो इमाम हो) **फिर आप उन को नमाज़ पढ़ाना चाहें** (और ख़तरा हो कि अगर सब नमाज़ में लग जाएंगे तो कोई दुशमन मौक़ा पाकर हमला कर बैठेगा) **तो** (ऐसी हालत में) **यह चाहिए कि** (जमाअ़त के दो हिस्से हो जाएं फिर) **उन में से एक हिस्सा तो आप के साथ** (नमाज़ में) **खड़े हो जाएं** (और दूसरा हिस्सा पहरेदारी के लिए दुशमन के मुक़ाबिले पर खड़ा रहे ताकि दुशमन को देखता रहे) **और वो लोग** (जो आप के साथ नमाज़ में शामिल हैं वो भी कुछ

थोड़े-थोड़े) **हथियार लेलें** (ताकि अगर मुक़ाबिले की ज़रूरत पड़ जाए तो हथियार लेने में देर न लगे), **फिर जब ये लोग** (आप के साथ) **सजदा करे चुकें** (यानी एक रकअत पूरी कर लें) **तो ये लोग** (पहरेदारी के लिए) **तुम्हारे पीछे हो जाएं और दूसरा गिरोह जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी** (यानी शुरू भी नहीं की वो उस पहले गिरोह की जगह इमाम के पास) **आ जाएं और आप के साथ नमाज़** (की एक रकअ़त जो बाक़ी रही है उस को) **पढ़ लें और ये लोग भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लेलें,** (क्योंकि) **काफ़िर लोग यह चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और सामानों से** (ज़रा) **बेपरवा हो जाओ तो एक दम तुम पर हमला कर दें** (सो ऐसी हालत में होशियार रहना ज़रूरी है)**, और अगर तुम को बारिश** (जैसी चीज़) **की वजह से** (हथियार लेकर चलने में) **तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो** (और इस वजह से हथियार बान्ध नहीं सकते) **तो तुम को इसमें** (भी) **कुछ गुनाह नहीं कि अपने हथियार उतार कर रख दो और** (फिर भी) **अपना बचाव** (का सामान ज़रूर) **लेलो, बेशक अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों के लिए रूसवाई भरी सज़ा तैयार कर रक्खी है(102) फिर जब तुम** (सलातुल ख़ौफ़ यानी ख़तरे वाली) **नमाज़ को अदा कर चुको तो** (पहले की तरह) **अल्लाह तआ़ला की याद में लग जाओ खड़े भी और बैठे भी और लेटे हुए भी फिर जब तुम बेफ़िक्र हो जाओ** (यानी सफ़र पूरा हो जाए या डर जाता रहे) **तो नमाज़ को** (असली) **क़ाइदे से पढ़ने लगो बेशक नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है अपने तय किये हुए वक़्तों में** (इसलिए नमाज़ वक़्त पर पढ़ना ज़रूरी है)(103) **और हिम्मत मत हारो उस दुशमन क़ौम के पीछा करने में** (जबकि इस की ज़रूरत है)**, अगर तुम** (ज़ख़्मों से) **तकलीफ़ में हो तो** (क्या हुआ) **वो भी तो दर्द** (और तकलीफ़) **में घिरे हैं जैसे तुम दर्द** (और तकलीफ़) **में घिरे** (हो तो वो तुम से ज़्यादा ताक़त नहीं रखते फिर किस लिए डरते) **हो, और तुम अल्लाह की तरफ़ से ऐसी चीज़ों की उम्मीद रखते हो कि वो लोग** (उन की) **उम्मीद नहीं रखते** (यानी सवाब, तो दिल की ताक़त में तो तुम ज़्यादा हुए और बदन की कमज़ोरी में एक जैसे)**, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले हैं** (कि काफ़िरों का कमज़ोर दिल कमज़ोर बदन होना जानते हैं) **बड़े हिकमत वाले हैं** (कि तुम्हारी सहार से ज़्यादा हुक्म नहीं दिया)(104)

**नोटः-** सफ़र में ख़तरा न हो तो भी नमाज़ क़स्र पढ़ी जाएगी और कुछ लोगों को पूरी नमाज़ की जगह क़स्र पढ़ने में गुनाह का शक होता है यह सही नहीं है इसलिए कि क़स्र भी शरीअ़त का हुक्म है जिस को मानने में गुनाह नहीं बल्कि सवाब मिलता है।

إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرٰىكَ اللّٰهُ ۚ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾ وَّ
اسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ أَنْفُسَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ
كَانَ خَوَّانًا أَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ
الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾ هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ
اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ
يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ
يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۲﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَ
رَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَنْ يُّضِلُّوْكَ ۚ وَمَا يُضِلُّوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَنْزَلَ
اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾

आयत न० 105 से 113

**नोटः-** इन आयतों में एक ख़ास क़िस्से का बयान है जिसमें बशीर नाम के एक आदमी ने चोरी करके उस का इल्ज़ाम दूसरे आदमी पर लगा दिया था इसलिए वही के वास्ते से उस का राज़ खोला गया और इन्साफ़ की नसीहत की गई। बाद में बशीर ग़लती मानने और तौबा करने के बजाए इस्लाम से फिर गया।

(ऐ पैग़म्बर) **बेशक हमने आप के पास यह किताब** (इसलिए) **भेजी** (जिससे आप) **असलीयत के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करें जो कि अल्लाह तआ़ला ने** (वही के वास्ते से) **आप को** (असली बात) **बता दी है** (वो वही यह है कि असल में बशीर चोर है और उस के क़बीले के लोग जो उसके हिमायती हैं झूटे हैं)**, और** (जब असली बात पता चल गई तो) **आप धोके बाज़ों की तरफ़दारी की बात न कीजिए(105) और** (इससे आप) **अल्लाह से तौबा कीजिए बेशक अल्लाह तआला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़े रहमत वाले हैं(106) और आप उन लोगों की तरफ़दारी की कोई बात न कीजिए** (जैसा वो लोग आप से चाहते थे) **जो कि** (लोगों के साथ धोकेबाज़ी और नुक़सान करके असल में) **अपना ही नुक़सान कर रहे हैं, बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को नहीं चाहते जो बड़ा धोका देने वाला गुनाहगार हो(107) जिन लोगों की यह हालत है कि** (अपनी ग़लतियों

को) **लोगों से तो शर्मा**(कर छुपा)**ते हैं और अल्लाह तआ़ला से नहीं शर्माते हालांकि वो** (हर वक़्त की तरह) **उस वक़्त** (भी) **उन के पास** (होता) **है जब कि वो अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मशवरे किया करते हैं, और अल्लाह तआ़ला उन के सब कारनामों को अपने** (इल्मी) **घेरे में लिए हुए हैं**(108) (और ये धोकेबाज़ सुन लें कि) **तुम ऐसे हो कि तुम ने दुनिया की ज़िन्दगी में तो उन की तरफ़दारी कर ली, सो** (यह बताओ कि) **अल्लाह तआ़ला के सामने क़ियामत के दिन उन की कौन तरफ़दारी करेगा वो कौन आदमी होगा जो उन का काम बनाने वाला** (होगा यानी कोई न) **होगा**(109) **और** (ये धोकेबाज़ अगर अब भी चाहते तो मुआ़फ़ी हो जाती क्योंकि) **जो आदमी कोई बुराई** (का काम) **करे या** (सिर्फ़) **अपनी जान का नुक़सान करे** (यानी ऐसा गुनाह न करे जिस का असर दूसरों तक पहुंचता हो और) **फिर अल्लाह तआ़ला से** (शरीअ़त के तरीक़े से) **मुआ़फ़ी चाहे तो अल्लाह तआ़ला को बड़ा मुआ़फ़ करने वाला बड़ा महरबान पाएगा**(110) **और** (ज़रूर गुनाहगारों को इस की कोशिश करना चाहिए क्योंकि) **जो आदमी कुछ गुनाह का काम करता है तो वो सिर्फ़ अपने लिए ही करता है और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले हैं** (सब के गुनाहों की उन को ख़बर है) **बड़े हिकमत वाले** (हैं ठीक-ठीक सज़ा देते) **हैं**(111) **और जो आदमी छोटा गुनाह करे या बड़ा गुनाह फिर** (तौबा करने के बजाए) **उस** (गुनाह) **का झूटा इल्ज़ाम किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उस ने बड़ा भारी तूफ़ान और खुला गुनाह अपने** (सर के) **ऊपर लाद लिया** (जैसा कि बशीर ने किया कि खुद तो चोरी की और दूसरे पर झूटा इल्ज़ाम लगा दिया)(112) **और अगर आप पर** (ऐ पैग़म्बर) **अल्लाह की महरबानी और रहमत न हो** (जो कि सदा आप पर रहती है) **तो इन** (चालाक लोगों में से) **एक गिरोह ने तो** (इस मुक़द्दमे में) **आप को ग़लती ही में डाल देने का इरादा कर लिया था** (लेकिन अल्लाह की महरबानी से उन की चालाकी की बातों का आप पर कोई असर नही हुआ और आगे भी नहीं होगा), **और वो** (कभी आप को) **ग़लती में नहीं डाल सकते लेकिन** (इस इरादे से) **अपनी जानों को** (गुनाह में डाल कर सज़ा का हक़दार बना रहे हैं) **और आप को ज़रा भी** (इस क़िस्म का) **नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, और** (आप को ग़लती से कैसे नुक़सान पहुंचा सकते हैं जब कि) **अल्लाह तआ़ल ने आप पर किताब और इल्म की बातें उतारीं और आप को ऐसी** (नफ़े की) **बातें बताई हैं जो आप** (पहले से) **न जानते थे, और आप पर अल्लाह की बड़ी महरबानी है**(113)

**नोटः**- यहां यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जितना

इल्म देते वो मिल जाता और वो इल्म सारी मख़लूक़ के इल्म से ज़्यादा था मगर वो इल्म अल्लाह के इल्म के बराबर नहीं था जैसा कि कुछ ना समझ लोग कहते हैं।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١١٤ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ
الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝١١٥

आयत न० 114 से 115

**आम लोगों के छुप कर मशवरे करने में कोई भलाई** (यानी सवाब व बरकत) **नहीं होती हां मगर जो लोग ऐसे हैं कि** (ख़ैर) **ख़ैरात की या और किसी नेक काम की या लोगों में आपस में सुधार कर देने की नसीहत करते हैं** (और इस काम के लिए मशवरे करते हैं इन में सवाब व बरकत है)**, और जो आदमी यह काम करेगा** (यानी ऐसे कामों की नसीहत करेगा) **अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने के लिए** (न कि नाम व शोहरत के लिए) **तो हम उस को जल्दी ही बहुत बड़ा सवाब देंगे(114) और जो आदमी रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की मुख़ालफ़त करेगा जब कि उस के सामने सीधा रास्ता खुल चुका और मुसलमानों का** (दीनी) **रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चले तो हम उस को** (दुनिया में) **जो कुछ करता है करने देंगे और** (आख़रत में) **उस को जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और वो बहुत बुरी जगह है(115)।**

**नोटः-** यहां यह भी मालूम हुआ कि दो चीज़ें बड़ा गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाली हैं एक तो रसूल की मुख़ालफ़त जो कुफ़्र और बहुत बड़ा वबाल है। दूसरे जिस काम पर सब मुसलमान एक राय हों जिस को ''इजमाए उम्मत'' कहते हैं उस को छोड़ कर उनके ख़िलाफ़ कोई रास्ता अपनाना।

एक हदीस में है कि जमाअत के सर पर अल्लाह का हाथ है और जो आदमी मुसलमानों की जमाअत से अलग होगा वो अलग करके जहन्नम में डाला जाएगा। (मुआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ
بَعِيْدًا ۝١١٦ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ۝١١٧ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ

مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ۙ وَّ لَاُضِلَّنَّهُمْ وَ لَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَ
لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ؕ
يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَ لَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا
مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

आयत न० 116 से 121

**बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात को** (सज़ा देकर भी) **न बख़्शेंगे कि उन के साथ किसी को साझी बनाया जाए** (बल्कि सदा की सज़ा होगी) **और इसके सिवा दूसरे जितने गुनाह हैं** (चाहे छोटे हों या बड़े) **जिस को चाहेंगे** (बिना सज़ा) **वो गुनाह बख़्श देंगे** (अलबत्ता अगर वो मुशरिक मुसलमान हो जाए तो फिर मुशरिक ही न रहा अब वो सदा की सज़ा भी न रहेगी), **और** (वजह इस शिर्क के न बख़्शने की यह है कि) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला के साथ** (किसी को) **साझी बनाता है वो** (सीधे रास्ते से) **भटक कर बड़ी दूर जा गिरता है(116) ये** (मुशरिक) **लोग अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर** (एक तो) **सिर्फ़ कुछ ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं और** (एक) **सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो कि** (अल्लाह तआ़ला के) **हुक्म से बाहर है(117)** (और) **जिस पर** (इस बेहुक्मी की वजह से) **अल्लाह तआ़ला ने फिटकार डाल रक्खी है, और जिसने** (फिटकारे जाने के वक़्त) **यह कहा था कि मैं** (पूरी कोशिश करके) **ज़रूर आप के बन्दों से** (अपनी ताबेदारी का) **तय हिस्सा लेकर रहूंगा(118) और मैं उन को** (अ़क़ीदों में) **गुमराह करूंगा और मैं उन को हवसें दिलाउंगा** (जिससे गुनाह की तरफ़ चलें) **और मैं उन को** (बुरे काम) **सिखाउंगा जिससे वो** (बुतों के नाम पर) **जानवरों के कानों को चीरेंगे** (और यह कुफ़्र के कामों में से है) **और मैं उन को** (यह भी) **सिखाउंगा जिससे वो अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ा करेंगे** (और यह बड़े गुनाहों में से है जैसे डाढ़ी मुंडाना बदन गोदवाना और इन जैसे), **और जो आदमी अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर शैतान को अपना साथी बनाएगा** (यानी अल्लाह का कहना न मान कर शैतान का कहना मानेगा) **वो** (आदमी) **खुले नुक़सान में पड़ेगा** (और वो खुला नुक़सान जहन्नम में जाना है)**(119) शैतान उन लोगों से** (अक़ीदों के बारे में झूटे) **वादे किया करता है** (कि तुम बेफ़िक्र रहो कहीं हिसाब न होगा) **और उन को हवसें दिलाता** (है कि इस गुनाह में ऐसा मज़ा है इस हराम तरीक़े में ऐसी आमदनी) **है, और शैतान उन से सिर्फ़ झूटे** (धोके के) **वादे करता है(120) ऐसे लोगों का** (जो कि शैतान की राह पर चलते हैं) **ठिकाना जहन्नम है और वो इस** (जहन्नम) **से**

**कहीं बचने की जगह न पाएंगे** (कि वहां जाकर पनाह लें)(121)।

**नोटः-** अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी मख़लूक़ को इबादत या मुहब्बत और इ़ज़्ज़त करने में अल्लाह तआ़ला के बराबर समझना शिर्क है और ऐसा करने वाला मुशरिक है जिस की काफ़िर की तरह कभी बख़्शिश न होगी।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ
وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّ
اتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾

आयत न० 122 से 126

**और जो लोग ईमान लाए और** (उन्होंने) **अच्छे काम किये हम उन को जल्दी ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी वो उन में सदा-सदा रहेंगे, अल्लाह तआ़ला ने इस का वादा किया है, और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किस का कहना सही होगा**(122) **न तुम्हारी तमन्नाओं से काम चलता है और न किताब वालों की तमन्नाओं से** (कि ख़ाली अपनी बड़ाई बयान करें बल्कि मदार ताबेदारी पर है, बस) **जो आदमी** (ताबेदारी में कमी करेगा और) **कोई बुरा काम करेगा वो उस के बदले में सज़ा पाएगा** (अगर वो बुराई कुफ़्र के अक़ीदे तक है तो सज़ा यक़ीनी और सदा की होगी और अगर इससे कम है तो सज़ा सदा की नहीं) **और इस आदमी को अल्लाह के सिवा न कोई यार मिलेगा न मददगार मिलेगा** (कि अल्लाह के अज़ाब से छुड़ा ले)(123) **और जो कोई आदमी नेक काम करेगा चाहे वो मर्द हो या औ़रत शर्त यह है कि मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा** (कि उन की कोई नेकी बर्बाद कर दी जाए)(124) **और ऐसे आदमी** (के दीन) **से ज़्यादा अच्छा किसका दीन होगा जो कि** (सच्चे दिल से) **अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुका दे**

**और नेक काम करे और मिल्लते इब्राहीम** (यानी इस्लाम) **पर चले जिसमें कमी का नाम नहीं, और अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **को अपना ख़ास दोस्त बनाया था** (और दोस्त के तरीक़े पर चलने वाला भी प्यारा और मक़बूल होगा और ऐसे सिर्फ़ मुसलमान हैं कि सिर्फ़ तमन्नाओं पर उन का सहारा नहीं)(125) **और अल्लाह तआ़ला ही मालिक हैं जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह ने हर चीज़ को** (अपनी क़ुदरत के) **घेरे में लिया हुआ है**(126)।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا
تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۸﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ
الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا
مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿۱۳۰﴾

आयत न० 127 से 130

**नोटः**- इन आयतों में यतीमों और औरतों के ख़ास हुक्मों का बयान किया गया हैः-

**और** (ऐ पैग़म्बर) **लोग आप से औरतों** (की मीरास और महर) **के बारे में** (शरीअ़त का) **हुक्म पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला उन के बारे में तुम को** (वो ही पहला) **हुक्म देते हैं और वो आयतें भी** (तुम को हुक्म देती हैं) **जो कि** (इसके पहले उतर चुकी हैं और) **क़ुरआन के अन्दर तुम को पढ़ कर सुनाई जाया करती हैं जो कि उन यतीम औरतों के बारे में** (उतरी) **हैं जिन** (के साथ तुम्हारा यह बरताव है कि अगर वो मालदार और ख़ूबसूरत हुईं तो उन से निकाह करते हो, मगर उन) **को जो** (शरीअ़त से) **उन का हक़** (मीरास व महर का) **तय किया हुआ है नहीं देते हो और** (अगर ख़ूबसूरत न हुईं सिर्फ़ मालदार हुईं तो) **उनके साथ निकाह करने से नफ़रत करते हो** (लेकिन माल के लालच में और किसी से भी निकाह नहीं करने देते) **और** (जो आयतें कि) **कमज़ोर बच्चों के बारे में** (हैं) **और** (जो आयतें कि) **इस बारे में** (हैं) **कि यतीमों के**

**सभी काम इन्साफ़ के साथ करो, और जो भलाई के काम करोगे** (औरतों और यतीमों के बारे में या और बातों में भी) **तो बेशक अल्लाह तआ़ला उस को अच्छी तरह जानते हैं** (तुम को उस का अच्छा बदला देंगे)(127) **और अगर किसी औरत को** (अन्दाज़े से) **अपने शौहर से ख़तरा हो झगड़ने या बेपरवाई** (करने) **का तो** (ऐसी हालत में) **दोनों को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि दोनों आपस में किसी तरह समझौता कर लें** (यानी औ़रत अगर ऐसे शौहर के पास रहना चाहे जो पूरे हक़ अदा नहीं करना चाहता और इसी लिए उस को छोड़ना चाहता है तो औरत अपने कुछ हक़ छोड़ दे जैसे ख़र्च में कमी या अपनी बारी मुआ़फ़ करदे ताकि वो छोड़े नही और शौहर को भी इस मुआ़फ़ी को मान लेना जाइज़ है), **और** (झगड़े या जुदाई से तो) **यह समझौता** (ही) **अच्छा है, और लालच तो जी के साथ लगा हुआ** (है तो जब लालच पूरा हो जाता है तो जी राज़ी हो जाता) **है, और** (ऐ मर्दों) **अगर तुम** (ख़ुद औरतों के साथ) **अच्छा बरताव रक्खो और** (उन के साथ बद सलूकी और बेपरवाई करने से) **बचते रहो तो** (तुम को बड़ा सवाब मिले क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखते** (हैं और नेक कामों पर सवाब दिया करते) **हैं**(128) **और तुम से यह तो कभी न हो सकेगा कि सब बीवियों में** (हर तरह से) **बराबरी रक्खो** (यहां तक कि दिली लगाव में भी क्योंकि यह अपने बस में नहीं) **चाहे** (इस बराबरी को) **तुम्हारा कितना ही जी चाहे** (और तुम कितनी ही कोशिश इसमें करो) **तो** (तुम पर वाजिब है कि) **तुम बिल्कुल एक ही तरफ़ न झुक जाओ** (यानी हक़ अदा करने में बे इन्साफ़ी न करो) **जिससे उस** (बेचारी) **को ऐसा कर दो जैसे कोई** (इधर की न उधर की) **बीच में लटकी हो** (यानी न तो उस के हक़ अदा किये जाएं और न तलाक़ दी जाए कि कहीं और निकाह करले), **और** (पहले जो नागवार बातें हुईं) **अगर** (उन बातों को अब) **सुधार लो और** (आगे से ऐसी बातों से) **परहेज़ रक्खो तो** (वो पिछली बातें मुआफ़ कर दी जाएं क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े मुआफ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं**(129) **और अगर दोनों मियां बीवी** (में किसी भी तरह मेल मिलाप न हो और दोनों) **अलग हो जाएं तो** (जान लें) **अल्लाह तआ़ला अपनी** (क़ुदरत की) **गुन्जाइश से** (दोनों में से) **हर एक को** (दूसरे से) **बेपरवा कर देगा** (यानी हर एक का काम दूसरे के बिना चल जाएगा), **और अल्लाह तआ़ला बड़े गुन्जाइश वाले और बड़ी हिकमत वाले** (हैं हर एक के लिए ठीक रास्ता निकाल देते) **हैं**(130)।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ
تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ
قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ يٰاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا
اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

आयत न० 131 से 135

**और अल्लाह तआ़ला ही** (हर चीज़ के) **मालिक हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़े कि ज़मीन में हैं** (तो ऐसे मालिक के हुक्मों का मानना बहुत ही ज़रूरी है), **और सचमुच हम ने उन लोगों को भी हुक्म दिया था जिन को तुम से पहले** (आसमानी) **किताब** (यानी तौरेत व इन्जील) **मिली थी और तुम को भी** (हुक्म दिया है) **कि अल्लाह तआ़ला से डरो** (जिस को तक़्वा कहते हैं), **और अगर तुम नाशुक्री करोगे** (यानी अल्लाह के हुक्मों को न मानोगे) **तो** (अल्लाह तआ़ला का कोई नुक़सान नही हां तुम्हारा ही नुक़सान है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **मालिक हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं** (ऐसे बड़े बादशाह का क्या नुक़सान होगा), **और अल्लाह तआ़ला को किसी** (की ताबेदारी) **की ज़रूरत नहीं** (और) **ख़ुद अपने आप में तमाम तारीफ़ों वाले हैं** (बस किसी की मुख़ालफ़त से कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता)(131) **और अल्लाह तआ़ला ही मालिक हैं जो चीज़ें आसमानों में और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआ़ला ही** (अपने ताबेदार बन्दों के) **सब काम बनाने वाले हैं**(132) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो ऐ लोगों तुम सब को मिटा देते और दूसरों को मौजूद कर देते** (और उन से काम ले लेते), **और अल्लाह तआ़ला इस पर पूरी क़ुदरत रखते हैं** (फिर ऐसा जो नहीं किया यह उन की महरबानी है)(133) **जो आदमी** (सिर्फ़) **दुनिया की भलाई चाहता हो** (वो सुन ले कि) **अल्लाह तआ़ला के पास** (यानी उन की क़ुदरत में) **तो दुनिया और आख़रत दोनों की भलाई** (मौजूद) **है** (तो फिर अच्छी चीज़ यानी आख़रत ही क्यों न मांगी जाए वैसे दुनिया की भलाई मांगने में भी हर्ज नहीं), **और अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले बड़े देखने वाले हैं**(134) **ऐ ईमान वालो**

(सभी बातों में हक़ अदा करने के वक़्त भी और फ़ैसले के वक़्त भी) **इन्साफ़ पर अच्छी तरह जमे रहने वाले** (और गवाही की नौबत आए तो) **अल्लाह** (की ख़ुशी) **के लिए** (सच्ची) **गवाही देने वाले रहो चाहे** (वो गवाही तुम्हारे) **अपने आप के ही ख़िलाफ़ हो** (जिस को इकरार कहते हैं) **या कि मां बाप और दूसरे नज़दीकी रिशतेदारों के ख़िलाफ़ हो,** (और गवाही के वक़्त अमीर ग़रीब न देखो क्योंकि) **वो आदमी** (जिसके ख़िलाफ़ गवाही देनी पड़ेगी) **अगर अमीर है तो ग़रीब है तो दोनों** (क़िस्म के लोगों) **का अल्लाह तआला** (तुम से) **ज़्यादा भला चाहने वाला है, सो तुम** (इस गवाही में) **जी की चाहत पर मत चलो कभी तुम सच्चाई से हट जाओ, और अगर तुम ग़लत बयान दोगे** (यानी ग़लत गवाही दोगे) **या** (सच्ची गवाही से) **बचने की कोशिश करोगे** (यानी गवाही को टालोगे) **तो** (याद रखना) **बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखते हैं**(135)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا ءَامِنُوا بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِى نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلْكِتَٰبِ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ مِن قَبْلُ ۚ وَ
مَن يَكْفُرْ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ثُمَّ
كَفَرُوا ثُمَّ ءَامَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ٱزْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ ٱللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًۢا ﴿١٣٧﴾ بَشِّرِ
ٱلْمُنَٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣٨﴾ ٱلَّذِينَ يَتَّخِذُونَ ٱلْكَٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ
عِندَهُمُ ٱلْعِزَّةَ فَإِنَّ ٱلْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿١٣٩﴾

आयत न० 136 से 139

**ऐ ईमान वालो तुम** (ज़रूरी अक़ीदों के बारे में सुन लो कि) **ऐतक़ाद रक्खो अल्लाह** (की हस्ती) **के साथ और उस के रसूल** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी) **के साथ और इस किताब** (के सच्ची होने) **के साथ जो उस ने** (यानी अल्लाह तआला ने) **अपने रसूल** (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारी और उन किताबों** (के सच्ची होने) **के साथ** (भी) **जो कि** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) **पहले** (और नबियों पर) **उतारी जा चुकी हैं, और जो आदमी अल्लाह** (की हस्ती और ख़ूबियों) **का इनकार करे और उस के फ़रिशतों का** (इनकार करे) **और उस की किताबों का** (इनकार करे) **और उस के पैग़म्बरों का** (इनकार करे, और पैग़म्बरों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी दाख़िल हैं) **और** (जो) **क़ियामत के दिन का** (इनकार करे) **तो वो आदमी गुमराही में बड़ी दूर जा पड़ा**(136) **बेशक जो लोग** (पहले तो) **मुसलमान हुए फिर काफ़िर हो गये फिर मुसलमान हुए** (और इस बार भी इस्लाम पर जमे न रहे

बल्कि) **फिर काफ़िर हो गये फिर** (मुसलमान ही न हुए वर्ना फिर भी ईमान क़ुबूल हो जाता बल्कि) **कुफ़्र में बढ़ते चले गये** (यानी मरते दम तक कुफ़्र पर जमे रहे) **अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को कभी भी न बख़्शेंगे और न उन को** (जन्नत का) **रास्ता दिखाएंगे** (क्योंकि बख़्शिश और जन्नत के लिए मौत तक मोमिन रहना ज़रूरी है)(137) **मुनाफ़िक़ों को इस बात की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए कि उन के वास्ते** (आख़रत में) **बड़ी दर्दनाक सज़ा** (तैयार) **है(138) जिन की यह हालत है कि काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं मुसलमानों को छोड़ कर, क्या उन के पास** (जाकर) **इज़्ज़त पाना चाहते हैं तो** (अच्छी तरह समझ लें कि) **इज़्ज़त तो सारी अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में है** (वो जिस को चाहे दें)(139)

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى
يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۙ﴿١٤٠﴾
الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ
قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾

आयत न० 140 से 141

**और** (ऐ मुसलमानो) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे पास यह हुक्म** (पहले भी) **भेज चुके हैं कि जब** (किसी जगह) **अल्लाह के हुक्मों के साथ मज़ाक़ और कुफ़्र होता हुआ सुनो तो उन लोगों के पास** (उस वक़्त तक) **मत बैठो जब तक कि वो कोई और बात शुरू न करें** (वर्ना) **इस हालत में तुम भी** (गुनाह में) **उन्हीं जैसे हो जाओगे, बेशक अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ों को और काफ़िरों को सब को दोज़ख़ में जमा कर देंगे(140)** (और) **वो** (मुनाफ़िक़ लोग) **ऐसे हैं कि तुम पर मुसीबत आने के इन्तिज़ार** (और तमन्ना) **में रहते हैं, फिर अगर तुम्हारी जीत अल्लाह की तरफ़ से हो गई तो** (तुम से आकर) **बातें बनाते हैं कि क्या हम** (जिहाद में) **तुम्हारे साथ न थे** (क्योंकि नाम के लिए तो मुसलमानों में घुसे ही रहते थे मतलब यह कि हम को भी ग़नीमत के माल का हिस्सा दो), **और अगर काफ़िरों को** (जीत का) **कुछ हिस्सा मिल गया तो** (उन से जाकर) **बातें बनाते हैं कि क्या हम ने तुम को घेर न लिया था** (मगर हम ने जान बूझ कर ऐसी चाल चली कि लड़ाई बिगड़ गई) **और क्या हम ने** (जब तुम हारने लगे थे) **तुम को मुसलमानों से बचा नहीं**

**लिया** (इस तरह कि उन की मदद न की मतलब यह कि हमारा अहसान मानो और जो कुछ तुम्हारे हाथ आया है हम को भी कुछ हिस्सा दिलवाओ मतलब यह कि दोनो तरफ़ हाथ मारते हैं), **तो** (दुनिया में चाहे मुसलमान होने का दिखावा करके मुसलमानों की सी ज़िन्दगी जी रहे हैं लेकिन) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारा और उन का क़ियामत में** (खुला) **फ़ैसला कर देंगे, और** (उस फ़ैसले में) **अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को मुसलमानों के मुक़ाबिले हरगिज़ कामयाबी न देंगे** (बल्कि काफ़िर दोज़ख़ में जाएंगे और मुसलमान जन्नत में जाएंगे वो खुला फ़ैसला ये ही है)(141)

**नोटः-** कुफ़्र की बातों पर राज़ी रहना कुफ़्र है। जहां ऐसी बातें होती हों वहां बिना मजबूरी ठहरना हराम है और अगर कोई बेबस हो और उन बातों से नागवारी रहे तो वो मजबूर है।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا
يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ
تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا
لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

आयत न० 142 से 144

**बेशक मुनाफ़िक़ लोग** (ईमान के दिखावे में) **चाल बाज़ी करते हैं अल्लाह से** (चाहे उन की चाल अल्लाह से छुपी नहीं रह सकती) **हालांकि अल्लाह तआ़ला इस चाल की सज़ा उन को देने वाले हैं, और** (चूंकि दिल में ईमान तो है नहीं इसलिए नमाज़ को फ़र्ज़ न समझें न इसमें सवाब का यक़ीन रक्खें इसलिए) **जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत ही सुस्ती** (और नागवारी) **के साथ खड़े होते हैं सिर्फ़ लोगों को** (अपना नमाज़ी होना) **दिखाते हैं** (ताकि मुसलमान समझें) **और** (चूंकि सिर्फ़ नमाज़ का नाम ही करना है इसलिए इस नमाज़ में) **अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र** (ज़बानी) **नहीं करते मगर बहुत ही थोड़ा** (यानी सिर्फ़ नमाज़ की सूरत ही बना लेते हैं और अजब नहीं कि उठना बैठना ही होता हो)(142) **लटके हुए हैं दोनो के** (यानी काफ़िरों और मोमिनों के) **बीच में न** (पूरे) **इधर न** (पूरे) **उधर, और जिस को अल्लाह तआ़ला गुमराही में डाल दें ऐसे आदमी के** (मोमिन होने के) **लिए कोई रास्ता न पाओगे**(143) **ऐ ईमान वालो तुम मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को** (चाहे मुनाफ़िक़ हों या खुले काफ़िर) **दोस्त मत बनाओ** (जैसा मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा है),

**क्या तुम** (उन से दोस्ती करके) **यह चाहते हो कि अपने ऊपर** (यानी अपने मुजरिम होने पर) **अल्लाह तआला की खुली दलील ठहरालो** (खुली दलील ये ही कि जब हम ने मना कर दिया था फिर ऐसा क्यों किया)(144)

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ اعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَ اَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَ سَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَ اٰمَنْتُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

आयत न० 145 से 147

**बेशक मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख़ के सबसे नीचे के दर्जे में जाएंगे, और तुम उन का कोई मददगार न पाओगे** (जो उन को उस सज़ा से बचा सके)(145) **लेकिन** (उनमें से) **जो लोग** (इस ग़लती से) **तौबा कर लें और** (मुसलमानों के साथ अपने बरताव का) **सुधार कर लें** (यानी फिर ऐसी बातें न करें) **और** (काफ़िरों की दोस्ती को छोड़ कर) **अल्लाह तआला पर भरोसा रक्खें और** (दिखावे को छोड़ कर) **अपने दीन** (के कामों) **को ख़ालिस अल्लाह ही** (को ख़ुश करने) **के लिए किया करें तो ये** (तौबा करने वाले) **लोग** (उन) **मोमिनों के साथ** (जन्नत के दर्जो में) **होंगे** (जो कि पहले से पूरा ईमान रखते हैं)**, और** (उन) **मोमिनों को अल्लाह तआला** (आख़रत में) **बड़ा सवाब दे** (गे बस जब ये मोमिनों के साथ होंगे तो ये भी बड़ा सवाब पाएं)**गे** (146) (और ऐ मुनाफ़िक़ों) **अल्लाह तआला तुम को सज़ा देकर क्या करेंगे अगर तुम** (उन की नेमतों का जो तुम पर हैं) **शुक्र अदा करो और** (तरीक़ा उस का यह है कि तुम) **ईमान ले आओ, और अल्लाह तआला** (तो ख़िदमत की) **बड़ी क़द्र करने वाले** (और दिल की नीयत को) **अच्छी तरह जानने वाले** (हैं बस जो आदमी सच्चे दिल से ताबेदारी करे उस को बहुत कुछ देते) **हैं**(147)।

**नोटः**- यहां यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला उसी नेक काम को कुबूल करते हैं जो दिखावे के लिए न हो और सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो इसी को इख़लास कहते हैं।